قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَمَنْ يَّقْنُتْ

पारा - 22

eParah

وَمَنْ	يَّقْنُتْ	مِنْكُنَّ	لِلّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	وَتَعْمَلْ	صَالِحًا
और जो कोई	इताअत करेगी	तुम में से	अल्लाह की	और उसके रसूल की	और अमल करेगी	नेक

نُّؤْتِهَآ	اَجْرَهَا	مَرَّتَيْنِ ۙ	وَاَعْتَدْنَا	لَهَا	رِزْقًا	كَرِيْمًا ﴿31﴾
हम देंगे उसे	अज्र उसका	दो बार	और तैयार कर रखा है हमने	उसके लिए	रिज़्क़	बाइज़्ज़त/उम्दा

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ	لَسْتُنَّ	كَاَحَدٍ	مِّنَ النِّسَآءِ	اِنِ	اتَّقَيْتُنَّ
ऐ नबी की बीवियो	नहीं हो तुम	किसी एक की तरह	औरतों में से	अगर	तुम तक़वा इख़्तियार करो

فَلَا	تَخْضَعْنَ	بِالْقَوْلِ	فَيَطْمَعَ	الَّذِيْ	فِيْ قَلْبِهٖ	مَرَضٌ
तो ना	तुम लोच पैदा करना	बात में	वरना तमाअ करेगा	वो शख़्स	जिसके दिल में	मर्ज़ है

وَّقُلْنَ	قَوْلًا	مَّعْرُوْفًا ﴿32﴾ ۚ	وَقَرْنَ	فِيْ بُيُوْتِكُنَّ	وَلَا	تَبَرَّجْنَ
और कहो	बात	भली/मारूफ़	और क़रार पकड़ो	अपने घरों में	और ना	तुम इज़्हारे ज़ीनत करो

تَبَرُّجَ	الْجَاهِلِيَّةِ	الْاُوْلٰى	وَاَقِمْنَ	الصَّلٰوةَ	وَاٰتِيْنَ	الزَّكٰوةَ
इज़्हारे ज़ीनत	जाहिलियत	पहली का	और क़ायम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात

وَاَطِعْنَ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ ؕ	اِنَّمَا	يُرِيْدُ	اللّٰهُ	لِيُذْهِبَ
और इताअत करो	अल्लाह की	और उसके रसूल की	बेशक	चाहता है	अल्लाह	कि वो ले जाए

عَنْكُمُ	الرِّجْسَ	اَهْلَ الْبَيْتِ	وَيُطَهِّرَكُمْ	تَطْهِيْرًا ﴿33﴾ ۚ	وَاذْكُرْنَ
तुमसे	नापाकी को	ऐ अहले बैत	और वो पाक कर दे तुम्हें	ख़ूब पाक करना	और याद रखो

مَا	يُتْلٰى	فِيْ بُيُوْتِكُنَّ	مِنْ اٰيٰتِ	اللّٰهِ	وَالْحِكْمَةِ ؕ	اِنَّ
उसको जो	पढ़ा जाता है	तुम्हारे घरों में	आयात में से	अल्लाह की	और हिक्मत में से	बेशक

اللّٰهَ	كَانَ	لَطِيْفًا	خَبِيْرًا ﴿34﴾ ع	اِنَّ	الْمُسْلِمِيْنَ	وَالْمُسْلِمٰتِ
अल्लाह	है	बहुत बारीक बीन	ख़ूब बाख़बर	बेशक	मुसलमान मर्द	और मुसलमान औरतें

ع 4 7 1

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْمُؤْمِنِيْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتِ	وَالْقٰنِتِيْنَ	وَالْقٰنِتٰتِ	وَالصّٰدِقِيْنَ
और मोमिन मर्द	और मोमिन औरतें	और फ़रमांबरदार मर्द	और फ़रमांबरदार औरतें	और सच्चे मर्द

وَالصّٰدِقٰتِ	وَالصّٰبِرِيْنَ	وَالصّٰبِرٰتِ	وَالْخٰشِعِيْنَ	وَالْخٰشِعٰتِ
और सच्ची औरतें	और सब्र करने वाले मर्द	और सब्र करने वाली औरतें	और ख़ुशूअ करने वाले मर्द	और ख़ुशूअ करने वाली औरतें

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ	وَالْمُتَصَدِّقٰتِ	وَالصَّآئِمِيْنَ	وَالصّٰٓئِمٰتِ	وَالْحٰفِظِيْنَ
और सदक़ा देने वाले मर्द	और सदक़ा देने वाली औरतें	और रोज़ा रखने वाले मर्द	और रोज़ा रखने वाली औरतें	और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द

فُرُوْجَهُمْ	وَالْحٰفِظٰتِ	وَالذّٰكِرِيْنَ	اللّٰهَ	كَثِيْرًا	وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ
अपनी शर्मगाहों की	और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें	और ज़िक्र करने वाले मर्द	अल्लाह का	बहुत ज़्यादा	और ज़िक्र करने वाली औरतें

اَعَدَّ	اللّٰهُ	لَهُمْ	مَّغْفِرَةً	وَّاَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿35﴾	وَمَا	كَانَ
तैयार कर रखी है	अल्लाह ने	उनके लिए	मग़फ़िरत	और अजर	बहुत बड़ा	और नहीं	है

لِمُؤْمِنٍ	وَّلَا	مُؤْمِنَةٍ	اِذَا	قَضَى	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗٓ
किसी मोमिन मर्द के लिए	और ना	किसी मोमिन औरत के लिए	जब	फ़ैसला कर दे	अल्लाह	और उसका रसूल

اَمْرًا	اَنْ	يَّكُوْنَ	لَهُمُ	الْخِيَرَةُ	مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ	وَمَنْ
किसी मामले का	कि	हो	उनके लिए	कोई इख़्तियार	अपने मामले में से	और जो कोई

يَّعْصِ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	فَقَدْ	ضَلَّ	ضَلٰلًا	مُّبِيْنًا ﴿36﴾ ؕ
नाफ़रमानी करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	तो तहक़ीक़	वो भटक गया	भटकना	खुल्लम-खुल्ला

وَاِذْ	تَقُوْلُ	لِلَّذِيْٓ	اَنْعَمَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِ	وَاَنْعَمْتَ	عَلَيْهِ
और जब	आप कह रहे थे	उस शख़्स से	इनआम किया	अल्लाह ने	जिस पर	और इनआम किया आपने	जिस पर

اَمْسِكْ	عَلَيْكَ	زَوْجَكَ	وَاتَّقِ	اللّٰهَ	وَتُخْفِيْ	فِيْ نَفْسِكَ
रोक रख	अपने पास	अपनी बीवी को	और डर	अल्लाह से	और आप छुपाते थे	अपने दिल में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا	اللّٰهُ	مُبْدِيْهِ	وَتَخْشَى	النَّاسَ ۚ	وَاللّٰهُ	اَحَقُّ	اَنْ
वो जो	अल्लाह	ज़ाहिर करने वाला था उसे	और आप डर रहे थे	लोगों से	हालांकि अल्लाह	ज़्यादा हक़दार है	कि

تَخْشٰىهُ ؕ	فَلَمَّا	قَضٰى	زَيْدٌ	مِّنْهَا	وَطَرًا	زَوَّجْنٰكَهَا
आप डरें उससे	फिर जब	पूरी कर चुका	ज़ैद	उस से	हाजत	हमने आपका उस से निकाह कर दिया

لِكَيْ لَا	يَكُوْنَ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	حَرَجٌ	فِيْٓ اَزْوَاجِ	اَدْعِيَآئِهِمْ
ताकि ना	हो	मोमिनो पर	कोई तंगी	बीवियों के मामले में	अपने मुंह बोले बेटों की

اِذَا	قَضَوْا	مِنْهُنَّ	وَطَرًا ؕ	وَكَانَ	اَمْرُ	اللّٰهِ	مَفْعُوْلًا ﴿37﴾
जब	वो पूरा कर चुकें	उनसे	हाजत	और है	हुक्म	अल्लाह का	होकर रहने वाला

مَا	كَانَ	عَلَى النَّبِيِّ	مِنْ حَرَجٍ	فِيْمَا	فَرَضَ	اللّٰهُ	لَهٗ ؕ
नहीं	है	नबी पर	कोई तंगी	उसमें जो	मुक़र्रर किया	अल्लाह ने	उसके लिए

سُنَّةَ	اللّٰهِ	فِي الَّذِيْنَ	خَلَوْا	مِنْ قَبْلُ ؕ	وَكَانَ	اَمْرُ
तरीक़ा है	अल्लाह का	उन लोगों में जो	गुज़र चुके	उससे पहले	और है	हुक्म

اللّٰهِ	قَدَرًا	مَّقْدُوْرًا ﴿38﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يُبَلِّغُوْنَ	رِسٰلٰتِ	اللّٰهِ
अल्लाह का	एक अंदाज़ा	मुक़र्रर किया हुआ	वो लोग जो	पहुंचाते हैं	पैग़ामात	अल्लाह के

وَيَخْشَوْنَهٗ	وَلَا	يَخْشَوْنَ	اَحَدًا	اِلَّا	اللّٰهَ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ
और वो डरते हैं उससे	और नहीं	वो डरते	किसी एक से भी	सिवाए	अल्लाह के	और काफ़ी है	अल्लाह

حَسِيْبًا ﴿39﴾	مَا	كَانَ	مُحَمَّدٌ	اَبَآ	اَحَدٍ	مِّنْ رِّجَالِكُمْ
हिसाब लेने वाला	नहीं	हैं	मोहम्मद	बाप	किसी एक के	तुम्हारे मर्दों में से

وَلٰكِنْ	رَّسُوْلَ	اللّٰهِ	وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	بِكُلِّ
और लेकिन	रसूल हैं	अल्लाह के	और خاتم النبیین हैं	और है	अल्लाह	हर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 6 2

شَيْءٍ	عَلِيمًا ﴿40﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اذْكُرُوا	اللّٰهَ	ذِكْرًا
चीज़ को	ख़ूब जानने वाला	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ज़िक्र करो	अल्लाह का	ज़िक्र करना

كَثِيْرًا ﴿41﴾ لا	وَّسَبِّحُوْهُ	بُكْرَةً	وَّاَصِيْلًا ﴿42﴾	هُوَ	الَّذِيْ	يُصَلِّيْ
कसरत से	और तस्बीह करो उसकी	सुबह	और शाम	वो ही है	जो	रहमत भेजता है

عَلَيْكُمْ	وَمَلٰٓئِكَتُهٗ	لِيُخْرِجَكُمْ	مِّنَ الظُّلُمٰتِ	اِلَى النُّوْرِ ؕ
तुम पर	और उसके फ़रिश्ते (दुआ करते हैं)	ताकि वो निकाले तुम्हें	अंधेरों से	तरफ़ रोशनी के

وَكَانَ	بِالْمُؤْمِنِيْنَ	رَحِيْمًا ﴿43﴾	تَحِيَّتُهُمْ	يَوْمَ	يَلْقَوْنَهٗ
और है वो	मोमिनों पर	ख़ूब रहम फ़रमाने वाला	उनकी दुआ होगी	जिस दिन	वो मिलेंगे उससे

سَلٰمٌ ۚ ع	وَاَعَدَّ	لَهُمْ	اَجْرًا	كَرِيْمًا ﴿44﴾	يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	اِنَّآ
सलाम	और उसने तैयार कर रखा है	उनके लिए	अज्र	उम्दा/बाइज़्ज़त	ऐ	नबी	बेशक हम

اَرْسَلْنٰكَ	شَاهِدًا	وَّمُبَشِّرًا	وَّنَذِيْرًا ﴿45﴾ لا	وَّدَاعِيًا	اِلَى اللّٰهِ
भेजा हमने आपको	गवाही देने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला बना कर	और दावत देने वाला	तरफ़ अल्लाह के

بِاِذْنِهٖ	وَسِرَاجًا	مُّنِيْرًا ﴿46﴾	وَبَشِّرِ	الْمُؤْمِنِيْنَ	بِاَنَّ
उसके इज़्न से	और चिराग़	रोशन	और ख़ुशख़बबरी दे दीजिए	मोमिनों को	कि बेशक

لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	فَضْلًا	كَبِيْرًا ﴿47﴾	وَلَا	تُطِعِ	الْكٰفِرِيْنَ
उनके लिए	अल्लाह की तरफ़ से है	फ़ज़्ल	बहुत बड़ा	और ना	आप इताअत कीजिए	काफ़िरों की

وَالْمُنٰفِقِيْنَ	وَدَعْ	اَذٰىهُمْ	وَتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ
और मुनाफ़िक़ों की	और नज़र अंदाज़ कर दीजिए	उनकी अज़ियत रसानी को	और तवक्कुल कीजिए	अल्लाह पर	और काफ़ी है	अल्लाह

وَكِيْلًا ﴿48﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِذَا	نَكَحْتُمُ	الْمُؤْمِنٰتِ	ثُمَّ
कारसाज़	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	निकाह करो तुम	मोमिन औरतों से	फिर

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

طَلَّقْتُمُوْهُنَّ	مِنْ قَبْلِ	اَنْ	تَمَسُّوْهُنَّ	فَمَا	لَكُمْ	عَلَيْهِنَّ
तलाक़ दे दो तुम उन्हें	इससे पहले	कि	तुम छुओ उन्हें	तो नहीं	तुम्हारे लिए	उन पर

مِنْ عِدَّةٍ	تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ	فَمَتِّعُوْهُنَّ	وَسَرِّحُوْهُنَّ	سَرَاحًا	جَمِيْلًا ﴿49﴾
कोई इद्दत	कि तुम शुमार करो उसे	तो कुछ फ़ायदा दो उन्हें	और रुख़्सत करो उन्हें	रुख़्सत करना	भले तरीक़े से

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	اِنَّآ	اَحْلَلْنَا	لَكَ	اَزْوَاجَكَ	الّٰتِيْٓ	اٰتَيْتَ
ऐ	नबी	बेशक हम	हलाल कर दीं हमने	आपके लिए	बीवियां आपकी	वो जिन्हें	दिए आपने

اُجُوْرَهُنَّ	وَمَا	مَلَكَتْ	يَمِيْنُكَ	مِمَّآ	اَفَآءَ	اللّٰهُ	عَلَيْكَ
महर उनके	और जिनका	मालिक है	दायां हाथ आपका	उसमें से जो	लौटाया	अल्लाह ने	आप पर

وَبَنٰتِ	عَمِّكَ	وَبَنٰتِ	عَمّٰتِكَ	وَبَنٰتِ	خَالِكَ	وَبَنٰتِ
और बेटियां	आपके चचा की	और बेटियां	आपकी फूफियों की	और बेटियां	आपके मामूं की	और बेटियां

خٰلٰتِكَ	الّٰتِيْ	هَاجَرْنَ	مَعَكَ ۘ	وَامْرَاَةً	مُّؤْمِنَةً	اِنْ
आपकी ख़ालाओं की	वो जिन्होंने	हिजरत की	आपके साथ	और कोई औरत	मोमिना	अगर

وَّهَبَتْ	نَفْسَهَا	لِلنَّبِيِّ	اِنْ	اَرَادَ	النَّبِيُّ	اَنْ	يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ
वो हिबा कर दे	अपने नफ़्स को	नबी के लिए	अगर	इरादा करें	नबी	कि	वो निकाह करें उससे

خَالِصَةً	لَّكَ	مِنْ دُوْنِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ	قَدْ	عَلِمْنَا	مَا
ख़ास है	आपके लिए	सिवाए	मोमिनों के	तहक़ीक़	जान लिया हमने	जो

فَرَضْنَا	عَلَيْهِمْ	فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ	وَمَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُهُمْ
फ़र्ज़ किया हमने	उन पर	उनकी बीवियों के मामले में	और जिनके	मालिक हैं	दाऐं हाथ उनके

لِكَيْلَا	يَكُوْنَ	عَلَيْكَ	حَرَجٌ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا
ताकि ना	हो	आप पर	कोई तंगी	और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَّحِيْمًا ﴿50﴾	تُرْجِيْ	مَنْ	تَشَآءُ	مِنْهُنَّ	وَتُـْٔوِيْٓ	اِلَيْكَ	مَنْ
निहायत रहम करने वाला	आप दूर रखें	जिसे	आप चाहें	उनमें से	और आप जगह दें	अपने पास	जिसे

تَشَآءُ ؕ	وَمَنِ	ابْتَغَيْتَ	مِمَّنْ	عَزَلْتَ	فَلَا	جُنَاحَ
आप चाहें	और जिसे	तलब करें आप	उनमें से जिसे	अलग कर दिया हो आपने	तो नहीं	कोई गुनाह

عَلَيْكَ ؕ	ذٰلِكَ	اَدْنٰٓى	اَنْ	تَقَرَّ	اَعْيُنُهُنَّ	وَلَا	يَحْزَنَّ
आप पर	ये	क़रीबतर है	कि	ठंडी हों	आंखें उनकी	और ना	वो ग़मगीन हों

وَيَرْضَيْنَ	بِمَآ	اٰتَيْتَهُنَّ	كُلُّهُنَّ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا
और वो राज़ी रहें	उस पर जो	दें आप उन्हें	सब की सब	और अल्लाह	वो जानता है	जो

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلِيْمًا	حَلِيْمًا ﴿51﴾	لَا يَحِلُّ	لَكَ
तुम्हारे दिलों में है	और है	अल्लाह	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिल्म वाला	नहीं हलाल	आपके लिए

النِّسَآءُ	مِنْۢ بَعْدُ	وَلَآ	اَنْ	تَبَدَّلَ	بِهِنَّ	مِنْ اَزْوَاجٍ	وَّلَوْ
औरतें	बाद इसके	और ना	कि	आप बदल लें	उनके बदले	कोई और बीवियां	और अगरचे

اَعْجَبَكَ	حُسْنُهُنَّ	اِلَّا	مَا	مَلَكَتْ	يَمِيْنُكَ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ
पसंद आए आपको	हुसन उनका	मगर	जिनका	मालिक है	दायां हाथ आपका	और है	अल्लाह

ع 6 12 3

عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	رَّقِيْبًا ﴿52﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَدْخُلُوْا
ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब निगरान	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम दाख़िल हो

بُيُوْتَ	النَّبِيِّ	اِلَّآ	اَنْ	يُّؤْذَنَ	لَكُمْ	اِلٰى طَعَامٍ	غَيْرَ
घरों में	नबी के	मगर	ये कि	इजाज़त दी जाए	तुम्हें	तरफ़ खाने के	ना

نٰظِرِيْنَ	اِنٰىهُ ۙ	وَلٰكِنْ	اِذَا	دُعِيْتُمْ	فَادْخُلُوْا	فَاِذَا
इंतिज़ार करने वाले हो	उसकी तैयारी का	और लेकिन	जब	बुलाए जाओ तुम	तो दाख़िल हो जाओ	फिर जब

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

طَعِمْتُمْ	فَانْتَشِرُوْا	وَلَا	مُسْتَاْنِسِيْنَ	لِحَدِيْثٍ ؕ	اِنَّ	ذٰلِكُمْ	كَانَ
खाना खा लो तुम	तो मुंतशिर हो जाओ	और ना हो	दिल लगाने वाले	बातों के लिए	बेशक	ये	है

يُؤْذِى	النَّبِىَّ	فَيَسْتَحْىٖ	مِنْكُمْ ۚ	وَاللّٰهُ	لَا يَسْتَحْىٖ	مِنَ الْحَقِّ ؕ
ईज़ा देता	नबी को	तो वो शर्माते हैं	तुमसे	और अल्लाह	नहीं शर्माता	हक़ से

وَاِذَا	سَاَلْتُمُوْهُنَّ	مَتَاعًا	فَسْـَٔلُوْهُنَّ	مِنْ وَّرَآءِ	حِجَابٍ ؕ	ذٰلِكُمْ
और जब	सवाल करो तुम उनसे	किसी चीज़ का	तो सवाल करो उनसे	पीछे से	पर्दे के	ये बात

اَطْهَرُ	لِقُلُوْبِكُمْ	وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ	وَمَا	كَانَ	لَكُمْ	اَنْ
ज़्यादा पाकीज़ा है	तुम्हारे दिलों के लिए	और उनके दिलों के लिए	और नहीं	है (मुनासिब)	तुम्हारे लिए	कि

تُؤْذُوْا	رَسُوْلَ اللّٰهِ	وَلَآ	اَنْ	تَنْكِحُوْٓا	اَزْوَاجَهٗ	مِنْۢ بَعْدِهٖٓ
तुम ईज़ा दो	अल्लाह के रसूल को	और ना	ये कि	तुम निकाह करो	उसकी बीवियों से	बाद उसके

اَبَدًا ؕ	اِنَّ	ذٰلِكُمْ	كَانَ	عِنْدَ	اللّٰهِ	عَظِيْمًا ﴿53﴾	اِنْ	تُبْدُوْا
कभी भी	बेशक	ये (बात)	है	नज़दीक	अल्लाह के	बहुत बड़ी	अगर	तुम ज़ाहिर करोगे

شَيْـًٔا	اَوْ	تُخْفُوْهُ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِكُلِّ	شَىْءٍ	عَلِيْمًا ﴿54﴾
कोई चीज़	या	तुम छुपाओगे उसे	तो बेशक	अल्लाह	है	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला

لَا جُنَاحَ	عَلَيْهِنَّ	فِىْٓ اٰبَآئِهِنَّ	وَلَآ	اَبْنَآئِهِنَّ	وَلَآ	اِخْوَانِهِنَّ
नहीं कोई गुनाह	उन (औरतों) पर	अपने बापों (के सामने आने) में	और ना	अपने बेटों के	और ना	अपने भाईयों के

وَلَآ	اَبْنَآءِ	اِخْوَانِهِنَّ	وَلَآ	اَبْنَآءِ	اَخَوٰتِهِنَّ	وَلَا	نِسَآئِهِنَّ
और ना	बेटों के	अपने भाईयों के	और ना	बेटों के	अपनी बहनों के	और ना	अपनी औरतों के

وَلَا	مَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُهُنَّ ۚ	وَاتَّقِيْنَ	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
और ना	उनके जो	मालिक हैं	दाऐं हाथ उनके	और डरती रहो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَانَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	شَهِيْدًا ﴿55﴾	اِنَّ	اللّٰهَ	وَمَلٰٓئِكَتَهٗ
है	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब गवाह	बेशक	अल्लाह	और उसके फ़रिश्ते

يُصَلُّوْنَ	عَلَى النَّبِيِّ ؕ	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	صَلُّوْا	عَلَيْهِ	وَسَلِّمُوْا
सलात/दुरूद भेजते हैं	नबी पर	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	सलात/दुरूद भेजो	आप पर	और सलाम भेजो

تَسْلِيْمًا ﴿56﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يُؤْذُوْنَ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	لَعَنَهُمُ	اللّٰهُ
ख़ूब सलाम भेजना	बेशक	वो जो	ईज़ा देते हैं	अल्लाह को	और उसके रसूल को	लानत की उन पर	अल्लाह ने

فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ	وَاَعَدَّ	لَهُمْ	عَذَابًا	مُّهِيْنًا ﴿57﴾	وَالَّذِيْنَ
दुनिया में	और आख़िरत में	और उसने तैयार कर रखा है	उनके लिए	अज़ाब	रुस्वा करने वाला	और वो जो

يُؤْذُوْنَ	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتِ	بِغَيْرِ	مَا	اكْتَسَبُوْا	فَقَدِ
ईज़ा देते हैं	मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों को	बग़ैर (किसी गुनाह के)	जो	उन्होंने कमाया	तो तहक़ीक़

ع 7 6 4

احْتَمَلُوْا	بُهْتَانًا	وَّاِثْمًا	مُّبِيْنًا ﴿58﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	قُلْ	لِّاَزْوَاجِكَ
उन्होंने उठा लिया	बोहतान	और गुनाह	खुला	ऐ	नबी	कह दीजिए	अपनी बीवियों से

وَبَنٰتِكَ	وَنِسَآءِ	الْمُؤْمِنِيْنَ	يُدْنِيْنَ	عَلَيْهِنَّ	مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ	
और अपनी बेटियों से	और औरतों से	मोमिनों की	कि वो लटका लें	अपने ऊपर	अपनी चादरों में से	

ذٰلِكَ	اَدْنٰٓى	اَنْ	يُّعْرَفْنَ	فَلَا	يُؤْذَيْنَ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ
ये	क़रीबतर है	कि	वो पहचान ली जाऐं	फिर ना	वो ईज़ा दी जाऐं	और है	अल्लाह

غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿59﴾	لَئِنْ	لَّمْ	يَنْتَهِ	الْمُنٰفِقُوْنَ	وَالَّذِيْنَ
बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	अलबत्ता अगर	ना	बाज़ आए	मुनाफ़िक़	और वो जो

فِيْ قُلُوْبِهِمْ	مَّرَضٌ	وَّالْمُرْجِفُوْنَ	فِي الْمَدِيْنَةِ	لَنُغْرِيَنَّكَ
दिलों में उनके	मर्ज़ है	और झूठी ख़बरें उड़ाने वाले	मदीने में	अलबत्ता हम ज़रूर मुसल्लत कर देंगे आपको

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِهِمْ	ثُمَّ	لَا يُجَاوِرُوْنَكَ	فِيْهَآ	اِلَّا	قَلِيْلًا ⑥⓪ صلے ج	مَّلْعُوْنِيْنَ ۚۛ
उन पर	फिर	ना वो हमसाए में रहेंगे आपके	उसमें	मगर	बहुत थोड़ा	लाअनत किए गए

اَيْنَمَا	ثُقِفُوْٓا	اُخِذُوْا	وَقُتِّلُوْا	تَقْتِيْلًا (61)	سُنَّةَ	اللّٰهِ
जहां कहीं	वो पाए जाऐं	वो पकड़ लिए जाऐं	और क़त्ल कर दिए जाऐं	बुरी तरह क़त्ल किया जाना	तरीक़ा है	अल्लाह का

فِى الَّذِيْنَ	خَلَوْا	مِنْ قَبْلُ ۚ	وَلَنْ	تَجِدَ	لِسُنَّةِ	اللّٰهِ
उनके बारे में जो	गुज़र चुके	इससे पहले	और हरगिज़ ना	आप पाऐंगे	तरीक़े में	अल्लाह के

ربع

تَبْدِيْلًا (62)	يَسْــَٔلُكَ	النَّاسُ	عَنِ السَّاعَةِ ط	قُلْ	اِنَّمَا
कोई तब्दीली	सवाल करते हैं आपसे	लोग	क़यामत के बारे में	कह दीजिए	बेशक

عِلْمُهَا	عِنْدَ	اللّٰهِ ط	وَمَا	يُدْرِيْكَ	لَعَلَّ	السَّاعَةَ	تَكُوْنُ
इल्म उसका	पास है	अल्लाह के	और क्या चीज़	बताए आपको	शायद कि	क़यामत	हो वो

قَرِيْبًا (63)	اِنَّ	اللّٰهَ	لَعَنَ	الْكٰفِرِيْنَ	وَاَعَدَّ	لَهُمْ	سَعِيْرًا (64) لا
क़रीब ही	बेशक	अल्लाह ने	लानत की है	काफ़िरों पर	और उसने तैयार कर रखा है	उनके लिए	भड़कती आग को

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ۚ	لَا يَجِدُوْنَ	وَلِيًّا	وَّلَا	نَصِيْرًا (65) ۚ
हमेशा रहने वाले हैं	उस में	हमेशा-हमेशा	ना वो पाऐंगे	कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार

يَوْمَ	تُقَلَّبُ	وُجُوْهُهُمْ	فِى النَّارِ	يَقُوْلُوْنَ	يٰلَيْتَنَآ
जिस दिन	उलट पुलट किए जाऐंगे	चेहरे उनके	आग में	वो कहेंगे	ऐ काश कि हम

اَطَعْنَا	اللّٰهَ	وَاَطَعْنَا	الرَّسُوْلَا (66)	وَقَالُوْا	رَبَّنَآ	اِنَّآ
इताअत करते हम	अल्लाह की	और इताअत करते हम	रसूल की	और वो कहेंगे	ऐ हमारे रब	बेशक हम

اَطَعْنَا	سَادَتَنَا	وَكُبَرَآءَنَا	فَاَضَلُّوْنَا	السَّبِيْلَا (67)	رَبَّنَآ
इताअत की हमने	अपने सरदारों की	और अपने बड़ों की	तो उन्होंने भटका दिया हमें	रास्ते से	ऐ हमारे रब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 8 10 5

اٰتِهِمْ	ضِعْفَيْنِ	مِنَ الْعَذَابِ	وَالْعَنْهُمْ	لَعْنًا	كَبِيْرًا ﴿68﴾ ع
दे इन्हें	दोगुना	अज़ाब में से	और लाअनत फ़रमा इन पर	लानत	बहुत बड़ी

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَكُوْنُوْا	كَالَّذِيْنَ	اٰذَوْا	مُوْسٰى
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम हो जाओ	उनकी तरह जिन्होंने	अज़ियतें दीं	मूसा को

فَبَرَّاَهُ	اللّٰهُ	مِمَّا	قَالُوْا ؕ	وَكَانَ	عِنْدَ	اللّٰهِ	وَجِيْهًا ﴿69﴾ ؕ
तो बरी कर दिया उसे	अल्लाह ने	उससे जो	उन्होंने कहा था	और था वो	नज़दीक	अल्लाह के	बहुत बाइज़्ज़त

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اتَّقُوا	اللّٰهَ	وَقُوْلُوْا	قَوْلًا	سَدِيْدًا ﴿70﴾ ۙ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	डरो	अल्लाह से	और कहो	बात	सीधी

يُّصْلِحْ	لَكُمْ	اَعْمَالَكُمْ	وَيَغْفِرْ	لَكُمْ	ذُنُوْبَكُمْ ؕ	وَمَنْ
वो इस्लाह कर देगा	तुम्हारे लिए	तुम्हारे आमाल की	और वो बख़्श देगा	तुम्हारे लिए	तुम्हारे गुनाहों को	और जो कोई

يُّطِعِ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	فَقَدْ	فَازَ	فَوْزًا	عَظِيْمًا ﴿71﴾	اِنَّا
इताअत करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	तो तहक़ीक़	वो कामयाब हुआ	कामयाब होना	बहुत बड़ा	बेशक हम

عَرَضْنَا	الْاَمَانَةَ	عَلَى السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَالْجِبَالِ	فَاَبَيْنَ
पेश किया हमने	अमानत को	आसमानों पर	और ज़मीन पर	और पहाड़ों पर	तो उन्होंने इंकार कर दिया

اَنْ	يَّحْمِلْنَهَا	وَاَشْفَقْنَ	مِنْهَا	وَحَمَلَهَا	الْاِنْسَانُ ؕ	اِنَّهٗ
कि	वो उठाऐं उसे	और वो डर गए	उससे	और उठा लिया उसे	इंसान ने	बेशक वो

كَانَ	ظَلُوْمًا	جَهُوْلًا ﴿72﴾ ۙ	لِّيُعَذِّبَ	اللّٰهُ	الْمُنٰفِقِيْنَ	وَالْمُنٰفِقٰتِ
है	बहुत ज़ालिम	बहुत जाहिल	ताकि अज़ाब दे	अल्लाह	मुनाफ़िक़ मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों को

وَالْمُشْرِكِيْنَ	وَالْمُشْرِكٰتِ	وَيَتُوْبَ	اللّٰهُ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
और मुशरिक मर्दों	और मुशरिक औरतों को	और मेहरबान हो जाए	अल्लाह	मोमिन मर्दों पर

© ALHIDAYAH INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 9 5 6

وَالْمُؤْمِنٰتِ ط	وَكَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (73) ع
और मोमिन औरतों पर	और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

اٰيَاتُهَا: 54 — 34 سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ 58 — رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِىْ	لَهٗ	مَا	فِى السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِى الْاَرْضِ
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	वो जो	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है

وَلَهُ	الْحَمْدُ	فِى الْاٰخِرَةِ ط	وَهُوَ	الْحَكِيْمُ	الْخَبِيْرُ (1)	يَعْلَمُ
और उसी के लिए है	सब तारीफ़	आख़िरत में	और वो	ख़ूब हिक्मत वाला है	ख़ूब बाख़बर है	वो जानता है

مَا	يَلِجُ	فِى الْاَرْضِ	وَمَا	يَخْرُجُ	مِنْهَا	وَمَا	يَنْزِلُ
जो कुछ	दाख़िल होता है	ज़मीन में	और जो कुछ	निकलता है	उससे	और जो कुछ	उतरता है

مِنَ السَّمَآءِ	وَمَا	يَعْرُجُ	فِيْهَا ط	وَهُوَ	الرَّحِيْمُ	الْغَفُوْرُ (2)
आसमान से	और जो कुछ	चढ़ता है	उसमें	और वो	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है

وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَا تَاْتِيْنَا	السَّاعَةُ ط	قُلْ	بَلٰى
और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं आएगी हम पर	क़यामत	कह दीजिए	क्यों नहीं

وَرَبِّىْ	لَتَاْتِيَنَّكُمْ لا	عٰلِمِ	الْغَيْبِ ج	لَا يَعْزُبُ	عَنْهُ
क़सम है मेरे रब की	अलबत्ता वो ज़रूर आएगी तुम्हारे पास	जानने वाला है	ग़ैब का	नहीं छुपा हुआ	उससे

مِثْقَالُ	ذَرَّةٍ	فِى السَّمٰوٰتِ	وَلَا	فِى الْاَرْضِ	وَلَآ	اَصْغَرُ
बराबर	एक ज़र्रे के	आसमानों में	और ना	ज़मीन में	और ना	छोटा

مِنْ ذٰلِكَ	وَلَآ	اَكْبَرُ	اِلَّا	فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (3)	لِّيَجْزِىَ
उससे	और ना	बड़ा	मगर	एक वाज़ेह किताब में है	ताकि वो बदला दे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَّغْفِرَةٌ	لَهُمْ	اُولٰٓئِكَ	الصّٰلِحٰتِ ط	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ
बख़्शिश	उनके लिए	यही लोग हैं	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	उनको जो

مُعٰجِزِيْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِنَا	سَعَوْ	وَالَّذِيْنَ	كَرِيْمٌ (4)	وَّرِزْقٌ
इस हाल में कि आजिज़ करने वाले हैं	हमारी आयात में	कोशिश की	और वो जिन्होंने	इज़्ज़त वाला	और रिज़्क़ है

الَّذِيْنَ	وَيَرَى	اَلِيْمٌ (5)	مِّنْ رِّجْزٍ	عَذَابٌ	لَهُمْ	اُولٰٓئِكَ
वो जो	और देखते हैं	दर्दनाक	सख़्ती का	अज़ाब है	उनके लिए	यही लोग हैं

الْحَقَّ لا	هُوَ	مِنْ رَّبِّكَ	اِلَيْكَ	اُنْزِلَ	الَّذِيْٓ	الْعِلْمَ	اُوْتُوا
हक़ है	वो ही	आपके रब की तरफ़ से	आपकी तरफ़	नाज़िल किया गया	कि जो	इल्म	दिए गए

الَّذِيْنَ	وَقَالَ	الْحَمِيْدِ (6)	الْعَزِيْزِ	اِلٰى صِرَاطِ	وَيَهْدِيْٓ
उन लोगों ने जिन्होंने	और कहा	ख़ूब तारीफ़ वाले के	बहुत ज़बरदस्त	तरफ़ रास्ते के	और वो रहनुमाई करता है

اِذَا	يُّنَبِّئُكُمْ	عَلٰى رَجُلٍ	نَدُلُّكُمْ	هَلْ	كَفَرُوْا
जब	जो ख़बर देता है तुम्हें	ऐसा शख़्स	हम बताएं तुम्हें	क्या	कुफ़्र किया

جَدِيْدٍ (7) ج	لَفِيْ خَلْقٍ	اِنَّكُمْ	مُمَزَّقٍ لا	كُلَّ	مُزِّقْتُمْ
नई	अलबत्ता पैदाइश में होगे	बेशक तुम	रेज़ा-रेज़ा किया जाना	पूरी तरह	रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाओगे तुम

الَّذِيْنَ	بَلِ	جِنَّةٌ ط	بِهٖ	اَمْ	كَذِبًا	عَلَى اللّٰهِ	اَفْتَرٰى
वो जो	बल्कि	कोई जुनून है	उसे	या	झूठ	अल्लाह पर	क्या उसने गढ़ लिया

اَفَلَمْ	الْبَعِيْدِ (8)	وَالضَّلٰلِ	فِي الْعَذَابِ	بِالْاٰخِرَةِ	لَا يُؤْمِنُوْنَ
क्या भला नहीं	दूर की	और गुमराही में हैं	अज़ाब में	आख़िरत पर	नहीं वो ईमान लाते

مِّنَ السَّمَآءِ	خَلْفَهُمْ	وَمَا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	اِلٰى مَا	يَرَوْا
आसमान से	उनके पीछे है	और जो	उनके सामने है	उसकी तरफ़ जो	उन्होंने देखा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْاَرْضِ ؕ	اِنْ	نَّشَاْ	نَخْسِفْ	بِهِمُ	الْاَرْضَ	اَوْ	نُسْقِطْ
और ज़मीन से	अगर	हम चाहें	हम धंसा दें	उन्हें	ज़मीन में	या	हम गिरा दें

عَلَيْهِمْ	كِسَفًا	مِّنَ السَّمَآءِ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّكُلِّ	عَبْدٍ
उन पर	कुछ टुकड़े	आसमान से	बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	वास्ते हर	बंदे

ع 1 9 7

مُّنِيْبٍ ⑨ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	دَاوٗدَ	مِنَّا	فَضْلًا ؕ	يٰجِبَالُ
रुजूअ करने वाले के	और अलबत्ता तहक़ीक़	दिया हमने	दाऊद को	अपने पास से	फ़ज़्ल	ऐ पहाड़ो

اَوِّبِيْ	مَعَهٗ	وَالطَّيْرَ ۚ	وَاَلَنَّا	لَهُ	الْحَدِيْدَ ⑩ لا	اَنِ
(तस्बीह) दोहराओ	साथ उसके	और परिंदों को (भी)	और नर्म किया हमने	उसके लिए	लोहा	कि

اعْمَلْ	سٰبِغٰتٍ	وَّقَدِّرْ	فِي السَّرْدِ	وَاعْمَلُوْا	صَالِحًا ؕ	اِنِّيْ
बनाओ	कुशादा ज़िरहें	और अंदाज़े पर रखो	हल्क़े में	और अमल करो	नेक	बेशक मैं

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ⑪	وَلِسُلَيْمٰنَ	الرِّيْحَ	غُدُوُّهَا
उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला हूं	और सुलैमान के लिए	हवा को (मुसख़्ख़र किया)	सुबह का चलना उसका

شَهْرٌ	وَّرَوَاحُهَا	شَهْرٌ ۚ	وَاَسَلْنَا	لَهٗ	عَيْنَ	الْقِطْرِ ؕ
एक माह का	और शाम का चलना उसका	एक माह का	और बहा दिया हमने	उसके लिए	चश्मा	पिघले हुए तांबे का

وَمِنَ الْجِنِّ	مَنْ	يَّعْمَلُ	بَيْنَ يَدَيْهِ	بِاِذْنِ	رَبِّهٖ ؕ	وَمَنْ
और जिन्नों में से	जो	काम करते थे	उसके सामने	इज़्न से	उसके रब के	और जो

يَّزِغْ	مِنْهُمْ	عَنْ اَمْرِنَا	نُذِقْهُ	مِنْ عَذَابِ	السَّعِيْرِ ⑫
सरकशी करता	उनमें से	हमारे हुक्म से	हम चखाते उसे	अज़ाब से	भड़कती हुई आग के

يَعْمَلُوْنَ	لَهٗ	مَا	يَشَآءُ	مِنْ مَّحَارِيْبَ	وَتَمَاثِيْلَ	وَجِفَانٍ
वो बनाते	उसके लिए	जो	वो चाहता	बड़ी-बड़ी इमारतें	और मुजस्समें	और लगन

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَالْجَوَابِ	وَقُدُوْرٍ	رّٰسِيٰتٍ ؕ	اِعْمَلُوْٓا	اٰلَ دَاوٗدَ	شُكْرًا ؕ	وَقَلِيْلٌ
हौज़ की तरह	और देगें	गड़ी हुईं	अमल करो	ऐ आले दाऊद	शुक्र करने के लिए	और कम ही हैं

مِّنْ عِبَادِيَ	الشَّكُوْرُ ⑬	فَلَمَّا	قَضَيْنَا	عَلَيْهِ	الْمَوْتَ	مَا
मेरे बंदों में से	शुक्र गुज़ार	फिर जब	मुक़र्रर किया हमने	उस पर	मौत को	ना

دَلَّهُمْ	عَلٰى مَوْتِهٖٓ	اِلَّا	دَآبَّةُ	الْاَرْضِ	تَاْكُلُ	مِنْسَاَتَهٗ ۚ
ख़बर दी उनको	उसकी मौत की	मगर	कीड़े ने	ज़मीन के	वो खाता रहा	उसका असा

فَلَمَّا	خَرَّ	تَبَيَّنَتِ	الْجِنُّ	اَنْ	لَّوْ	كَانُوْا	يَعْلَمُوْنَ
फिर जब	वो गिर पड़ा	वाज़ेह हो गया	जिन्नों पर	कि	अगर	होते वो	वो इल्म रखते

الْغَيْبَ	مَا	لَبِثُوْا	فِي الْعَذَابِ	الْمُهِيْنِ ⑭ ؕ	لَقَدْ	كَانَ	لِسَبَاٍ
ग़ैब का	ना	वो रहते	अज़ाब में	रुस्वाकुन	अलबत्ता तहक़ीक़	थी	सबा के लिए

فِيْ مَسْكَنِهِمْ	اٰيَةٌ ۚ	جَنَّتٰنِ	عَنْ يَّمِيْنٍ	وَّشِمَالٍ ؕ	كُلُوْا
उनके घरों में	एक निशानी	दो बाग़	दाएं तरफ़	और बाएं तरफ़	खाओ

مِنْ رِّزْقِ	رَبِّكُمْ	وَاشْكُرُوْا	لَهٗ ؕ	بَلْدَةٌ	طَيِّبَةٌ	وَّرَبٌّ
रिज़्क़ में से	अपने रब की	और शुक्र करो	उसका	शहर है	पाकीज़ा	और रब है

غَفُوْرٌ ⑮	فَاَعْرَضُوْا	فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	سَيْلَ	الْعَرِمِ
ख़ूब बख़्शने वाला	फिर वो मुंह मोड़ गए	तो भेजा हमने	उन पर	सैलाब	बंद तोड़

وَبَدَّلْنٰهُمْ	بِجَنَّتَيْهِمْ	جَنَّتَيْنِ	ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ	وَّاَثْلٍ
और बदल कर दिए हमने उन्हें	बदले उनके दो बाग़ों के	दो बाग़	बद मज़ा फलों वाले	और झाओ के दरख़्त

وَّشَيْءٍ	مِّنْ سِدْرٍ	قَلِيْلٍ ⑯	ذٰلِكَ	جَزَيْنٰهُمْ	بِمَا	كَفَرُوْا ؕ
और कुछ	बेरी के दरख़्त	थोड़े से	ये	बदला दिया हमने उन्हें	बवजह उसके जो	उन्होंने नाशुक्री की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَهَلْ	نُجٰزِيْٓ	اِلَّا	الْكَفُوْرَ ﴿17﴾	وَجَعَلْنَا	بَيْنَهُمْ	وَبَيْنَ
और नहीं	हम बदला/सज़ा देते	मगर	सख़्त नाशुक्रे को	और बनाईं थीं हमने	दर्मियान उनके	और दर्मियान

الْقُرَى	الَّتِيْ	بٰرَكْنَا	فِيْهَا	قُرًى	ظَاهِرَةً	وَّقَدَّرْنَا
उन बस्तियों के	वो जो	बरकत दी हमने	जिनमें	बस्तियां	ज़ाहिर/नुमायां	और अंदाज़े पर रखी हमने

فِيْهَا	السَّيْرَ ؕ	سِيْرُوْا	فِيْهَا	لَيَالِيَ	وَاَيَّامًا	اٰمِنِيْنَ ﴿18﴾
उनमें	मसाफ़त	चलो फिरो	उसमें	रातों को	और दिनों को	अमन से रहने वाले

فَقَالُوْا	رَبَّنَا	بٰعِدْ	بَيْنَ	اَسْفَارِنَا	وَظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
तो उन्होंने कहा	ऐ हमारे रब	दूरी पैदा कर दे	दर्मियान	हमारे सफ़रों के	और उन्होंने ज़ुल्म किया	अपनी जानों पर

فَجَعَلْنٰهُمْ	اَحَادِيْثَ	وَمَزَّقْنٰهُمْ	كُلَّ	مُمَزَّقٍ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
तो बना दिया हमने उन्हें	बातें/अफ़साने	और रेज़ा-रेज़ा कर दिया हमने उन्हें	हर तरह	रेज़ा-रेज़ा करना	यक़ीनन	उसमें

لَاٰيٰتٍ	لِّكُلِّ	صَبَّارٍ	شَكُوْرٍ ﴿19﴾	وَلَقَدْ	صَدَّقَ	عَلَيْهِمْ
अलबत्ता निशानियां हैं	वास्ते हर	बहुत सब्र करने वाले	बहुत शुक्र गुज़ार के	और अलबत्ता तहक़ीक़	सच कर दिखाया	उन पर

اِبْلِيْسُ	ظَنَّهٗ	فَاتَّبَعُوْهُ	اِلَّا	فَرِيْقًا	مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿20﴾
इब्लीस ने	गुमान अपना	तो उन्होंने पैरवी की उसकी	सिवाय	एक गिरोह के	मोमिनों में से

وَمَا	كَانَ	لَهٗ	عَلَيْهِمْ	مِّنْ سُلْطٰنٍ	اِلَّا	لِنَعْلَمَ	مَنْ
और ना	था	उसका	उन पर	कोई ज़ोर	मगर	ताकि हम जान लें	कौन

يُّؤْمِنُ	بِالْاٰخِرَةِ	مِمَّنْ	هُوَ	مِنْهَا	فِيْ شَكٍّ ؕ	وَرَبُّكَ
ईमान लाता है	आख़िरत पर	उससे जो	वो है	उसके बारे में	शक में	और रब आपका

عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	حَفِيْظٌ ﴿21﴾ ع	قُلِ	ادْعُوا	الَّذِيْنَ	زَعَمْتُمْ
ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब निगहबान है	कह दीजिए	पुकारो	उनको जिन्हें	समझते हो तुम (माबूद)

ع 2 12 8

© AL-HIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ۚ	لَا يَمْلِكُوْنَ	مِثْقَالَ	ذَرَّةٍ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَلَا
सिवाए	अल्लाह के	नहीं वो मालिक हो सकते	बराबर	ज़र्रे के	आसमानों में	और ना

فِي الْاَرْضِ	وَمَا	لَهُمْ	فِيْهِمَا	مِنْ شِرْكٍ	وَّمَا	لَهٗ	مِنْهُمْ
ज़मीन में	और नहीं	उनके लिए	उन दोनों में	कोई हिस्सा	और नहीं	उसके लिए	उनमें से

مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿22﴾	وَلَا	تَنْفَعُ	الشَّفَاعَةُ	عِنْدَهٗٓ	اِلَّا	لِمَنْ
कोई मददगार	और ना	फ़ायदा देगी	सिफ़ारिश	उसके पास	मगर	जिसके लिए

اَذِنَ	لَهٗ ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	فُزِّعَ	عَنْ قُلُوْبِهِمْ	قَالُوْا
वो इजाज़त दे	उसे	यहां तक कि	जब	घबराहट दूर की जाएगी	उनके दिलों से	वो कहेंगे

مَاذَا ۙ	قَالَ	رَبُّكُمْ ؕ	قَالُوا	الْحَقَّ ۚ	وَهُوَ	الْعَلِيُّ	الْكَبِيْرُ ﴿23﴾
क्या कुछ	फ़रमाया	तुम्हारे रब ने	वो कहेंगे	हक़	और वो ही है	बहुत बुलंद	बहुत बड़ा

قُلْ	مَنْ	يَّرْزُقُكُمْ	مِّنَ السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	قُلِ	اللّٰهُ ۙ
कह दीजिए	कौन	रिज़्क़ देता है तुम्हें	आसमानों से	और ज़मीन से	कह दीजिए	अल्लाह

وَاِنَّآ	اَوْ	اِيَّاكُمْ	لَعَلٰى هُدًى	اَوْ	فِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿24﴾
और बेशक हम	या	तुम	अलबत्ता हिदायत पर हैं	या	गुमराही में हैं	खुली-खुली

قُلْ	لَّا تُسْـَٔلُوْنَ	عَمَّآ	اَجْرَمْنَا	وَلَا	نُسْـَٔلُ	عَمَّا
कह दीजिए	नहीं तुम पूछे जाओगे	उसके बारे में जो	जुर्म किए हमने	और ना	हम पूछे जाऐंगे	उसके बारे में जो

تَعْمَلُوْنَ ﴿25﴾	قُلْ	يَجْمَعُ	بَيْنَنَا	رَبُّنَا	ثُمَّ	يَفْتَحُ	بَيْنَنَا
तुम अमल करते हो	कह दीजिए	जमा करेगा	हमारे दर्मियान	रब हमारा	फिर	वो फ़ैसला करेगा	हमारे दर्मियान

بِالْحَقِّ ؕ	وَهُوَ	الْفَتَّاحُ	الْعَلِيْمُ ﴿26﴾	قُلْ	اَرُوْنِيَ	الَّذِيْنَ
साथ हक़ के	और वो	ज़बरदस्त फ़ैसला करने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	कह दीजिए	दिखाओ मुझे	वो जिन्हें

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلْحَقْتُمْ	بِهٖ	شُرَكَآءَ	كَلَّا ؕ	بَلْ	هُوَ	اللّٰهُ	الْعَزِيْزُ
मिला दिया तुमने	साथ उसके	शरीक (बनाकर)	हरगिज़ नहीं	बल्कि	वो ही है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त

الْحَكِيْمُ ﴿27﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنٰكَ	اِلَّا	كَآفَّةً	لِّلنَّاسِ	بَشِيْرًا
ख़ूब हिक्मत वाला	और नहीं	भेजा हमने आपको	मगर	तमाम	इंसानों के लिए	ख़ुशख़बरी देने वाला

وَّنَذِيْرًا	وَّلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿28﴾	وَيَقُوْلُوْنَ
और डराने वाला बनाकर	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो इल्म रखते	और वो कहते हैं

مَتٰى	هٰذَا	الْوَعْدُ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿29﴾	قُلْ	لَّكُمْ
कब होगा	ये	वादा	अगर	हो तुम	सच्चे	कह दीजिए	तुम्हारे लिए

مِّيْعَادُ	يَوْمٍ	لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ	عَنْهُ	سَاعَةً	وَّلَا	تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿30﴾ ع	النصف ع 3
वादा है	एक दिन का	ना तुम पीछे हो सकते हो	उससे	एक घड़ी भी	और ना	तुम आगे बढ़ सकते हो	

وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَنْ	نُّؤْمِنَ	بِهٰذَا	الْقُرْاٰنِ	وَلَا
और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	हरगिज़ नहीं	हम ईमान लाऐंगे	साथ इस	क़ुरआन के	और ना

بِالَّذِيْ	بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ	وَلَوْ	تَرٰٓى	اِذِ	الظّٰلِمُوْنَ	مَوْقُوْفُوْنَ
उसके जो	पहले है इससे	और काश	आप देखें	जब	ज़ालिम लोग	खड़े हुए होंगे

عِنْدَ	رَبِّهِمْ ۚ	يَرْجِعُ	بَعْضُهُمْ	اِلٰى بَعْضٍ	الْقَوْلَ ۚ	يَقُوْلُ
सामने	अपने रब के	लौटाएगा	बाज़ उनका	तरफ़ बाज़ के	बात को	कहेंगे

الَّذِيْنَ	اسْتُضْعِفُوْا	لِلَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْا	لَوْلَآ	اَنْتُمْ	لَكُنَّا
वो लोग जो	कमज़ोर समझे गए थे	उनसे जिन्होंने	तकब्बुर किया	अगर ना होते	तुम	अलबत्ता होते हम

مُؤْمِنِيْنَ ﴿31﴾	قَالَ	الَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْا	لِلَّذِيْنَ	اسْتُضْعِفُوْٓا
मोमिन	कहेंगे	वो जिन्होंने	तकब्बुर किया	उनसे जो	कमज़ोर समझे गए

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنَحْنُ	صَدَدْنٰكُمْ	عَنِ الْهُدٰى	بَعْدَ	اِذْ	جَآءَكُمْ	بَلْ
क्या हमने	रोका था हमने तुम्हें	हिदायत से	बाद इसके कि	जब	वो आ गई तुम्हारे पास	बल्कि

كُنْتُمْ	مُّجْرِمِيْنَ ﴿32﴾	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	اسْتُضْعِفُوْا	لِلَّذِيْنَ
थे तुम ही	मुजरिम	और कहेंगे	वो जो	कमज़ोर समझे गए	उनसे जिन्होंने

اسْتَكْبَرُوْا	بَلْ	مَكْرُ	الَّيْلِ	وَالنَّهَارِ	اِذْ	تَاْمُرُوْنَنَآ	اَنْ
तकब्बुर किया	बल्कि	चाल थी	रात	और दिन की	जब	तुम हुक्म देते थे हमें	कि

نَّكْفُرَ	بِاللّٰهِ	وَنَجْعَلَ	لَهٗٓ	اَنْدَادًا ؕ	وَاَسَرُّوا	النَّدَامَةَ
हम कुफ़्र करें	साथ अल्लाह के	और हम बनाऐं	उसके लिए	कुछ शरीक	और वो छुपाऐंगे	नदामत

لَمَّا	رَاَوُا	الْعَذَابَ ؕ	وَجَعَلْنَا	الْاَغْلٰلَ	فِيْٓ اَعْنَاقِ	الَّذِيْنَ
जब	वो देखेंगे	अज़ाब को	और हम डाल देंगे	तौक़	गर्दनों में	उनकी जिन्होंने

كَفَرُوْا ؕ	هَلْ	يُجْزَوْنَ	اِلَّا	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿33﴾	وَمَآ
कुफ़्र किया	नहीं	वो बदला दिए जाऐंगे	मगर	उसका जो	थे वो	अमल करते	और नहीं

اَرْسَلْنَا	فِيْ قَرْيَةٍ	مِّنْ نَّذِيْرٍ	اِلَّا	قَالَ	مُتْرَفُوْهَآ ۙ	اِنَّا
भेजा हमने	किसी बस्ती में	कोई डराने वाला	मगर	कहा	उसके ख़ुशहाल लोगों ने	बेशक हम

بِمَآ	اُرْسِلْتُمْ	بِهٖ	كٰفِرُوْنَ ﴿34﴾	وَقَالُوْا	نَحْنُ	اَكْثَرُ
उसका जो	भेजे गए तुम	साथ उसके	इंकार करने वाले हैं	और उन्होंने कहा	हम	ज़्यादा हैं

اَمْوَالًا	وَّاَوْلَادًا ۙ	وَّمَا	نَحْنُ	بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿35﴾	قُلْ	اِنَّ	رَبِّيْ
माल में	और औलाद में	और नहीं	हम	अज़ाब दिए जाने वाले	कह दीजिए	बेशक	रब मेरा

يَبْسُطُ	الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَقْدِرُ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ
वो फैलाता है	रिज़्क़ को	जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है	और लेकिन	अक्सर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 6 10

النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿36﴾ ع	وَمَآ	اَمْوَالُكُمْ	وَلَآ	اَوْلَادُكُمْ	بِالَّتِيْ
लोग	नहीं वो जानते	और नहीं	माल तुम्हारे	और ना	औलाद तुम्हारी	सबब उस चीज़ का जो

تُقَرِّبُكُمْ	عِنْدَنَا	زُلْفٰٓى	اِلَّا	مَنْ	اٰمَنَ	وَعَمِلَ	صَالِحًا ۚ
क़रीब करे तुम्हें	हम से	दर्जे में	मगर	जो कोई	ईमान लाया	और उसने अमल किए	नेक

فَاُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	جَزَآءُ	الضِّعْفِ	بِمَا	عَمِلُوْا	وَهُمْ
तो यही लोग हैं	उनके लिए	बदला है	दोगुना	बवजह उसके जो	उन्होंने अमल किए	और वो

فِي الْغُرُفٰتِ	اٰمِنُوْنَ ﴿37﴾	وَالَّذِيْنَ	يَسْعَوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِنَا	مُعٰجِزِيْنَ
बाला ख़ानों में	अमन में होंगे	और वो जो	कोशिश करते हैं	हमारी आयात में	इस हाल में कि आजिज़ करने वाले हैं

اُولٰٓئِكَ	فِي الْعَذَابِ	مُحْضَرُوْنَ ﴿38﴾	قُلْ	اِنَّ	رَبِّيْ	يَبْسُطُ
यही लोग हैं	अज़ाब में	हाज़िर किए गए	कह दीजिए	बेशक	रब मेरा	वो फैला देता है

الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ	وَيَقْدِرُ	لَهٗ ؕ	وَمَآ
रिज़्क़	जिसके लिए	वो चाहता है	अपने बंदों में से	और वो तंग कर देता है	उसके लिए	और जो

اَنْفَقْتُمْ	مِّنْ شَيْءٍ	فَهُوَ	يُخْلِفُهٗ ۚ	وَهُوَ	خَيْرُ	الرّٰزِقِيْنَ ﴿39﴾
तुम ख़र्च करते हो	कुछ भी	तो वो	वो बदला देता है उसका	और वो	बेहतर है	सब रिज़्क़ देने वालों में

وَيَوْمَ	يَحْشُرُهُمْ	جَمِيْعًا	ثُمَّ	يَقُوْلُ	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اَهٰٓؤُلَآءِ
और जिस दिन	वो इकट्ठा करेगा उन्हें	सब के सब को	फिर	वो फ़रमाएगा	फ़रिश्तों से	क्या ये लोग

اِيَّاكُمْ	كَانُوْا	يَعْبُدُوْنَ ﴿40﴾	قَالُوْا	سُبْحٰنَكَ	اَنْتَ	وَلِيُّنَا
सिर्फ़ तुम्हारी ही	थे वो	वो इबादत करते	वो कहेंगे	पाक है तू	तू ही	दोस्त है हमारा

مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ	بَلْ	كَانُوْا	يَعْبُدُوْنَ	الْجِنَّ ۚ	اَكْثَرُهُمْ	بِهِمْ
उनके सिवा	बल्कि	थे वो	वो इबादत करते	जिन्नों की	अक्सर उनके	उन्हीं पर

© ALHUDA INTERNATIONAL WEBSITE FOUNDATION

مُّؤْمِنُوْنَ ﴿41﴾	فَالْيَوْمَ	لَا يَمْلِكُ	بَعْضُكُمْ	لِبَعْضٍ	نَّفْعًا	وَّلَا
ईमान लाने वाले थे	तो आज के दिन	ना मालिक होगा	बाज़ तुम्हारा	बाज़ के लिए	किसी नफ़ा का	और ना

ضَرًّا ؕ	وَنَقُوْلُ	لِلَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	ذُوْقُوْا	عَذَابَ	النَّارِ	الَّتِيْ
किसी नुक़्सान का	और हम कहेंगे	उनको जिन्होंने	ज़ुल्म किया	चखो	अज़ाब	आग का	वो जो

كُنْتُمْ	بِهَا	تُكَذِّبُوْنَ ﴿42﴾	وَاِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُنَا
थे तुम	जिसे	तुम झुठलाया करते	और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर	आयात हमारी

بَيِّنٰتٍ	قَالُوْا	مَا	هٰذَآ	اِلَّا	رَجُلٌ	يُّرِيْدُ	اَنْ	يَّصُدَّكُمْ
वाज़ेह	वो कहते हैं	नहीं	ये	मगर	एक शख़्स	वो चाहता है	कि	वो रोक दे तुम्हें

عَمَّا	كَانَ	يَعْبُدُ	اٰبَآؤُكُمْ ۚ	وَقَالُوْا	مَا	هٰذَآ	اِلَّآ
उनसे जिनकी	थे	इबादत करते	आबा ओ अजदाद तुम्हारे	और वो कहते हैं	नहीं	ये	मगर

اِفْكٌ	مُّفْتَرًى ؕ	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لِلْحَقِّ	لَمَّا
एक झूठ	गढ़ा हुआ	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	हक़ के बारे में	जब

جَآءَهُمْ ۙ	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّا	سِحْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿43﴾	وَمَآ	اٰتَيْنٰهُمْ
वो आ गया उनके पास	नहीं	ये	मगर	जादू	वाज़ेह	और नहीं	दीं हमने उन्हें

مِّنْ كُتُبٍ	يَّدْرُسُوْنَهَا	وَمَآ	اَرْسَلْنَآ	اِلَيْهِمْ	قَبْلَكَ	مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿44﴾ ؕ
कुछ किताबें	वो पढ़ते हों उन्हें	और नहीं	भेजा हमने	तरफ़ उनके	आपसे पहले	कोई डराने वाला

وَكَذَّبَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ	وَمَا	بَلَغُوْا	مِعْشَارَ	مَآ
और झुठलाया	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	और नहीं	वो पहुंचे	दसवें हिस्से को (भी)	जो

اٰتَيْنٰهُمْ	فَكَذَّبُوْا	رُسُلِيْ ۫	فَكَيْفَ	كَانَ	نَكِيْرِ ﴿45﴾ ع	قُلْ
दिया था हमने उन्हें	तो उन्होंने झुठलाया था	मेरे रसूलों को	तो कैसा	था	अज़ाब मेरा	कह दीजिए

ع 5 9 11

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّمَآ	اَعِظُكُمْ	بِوَاحِدَةٍ ۚ	اَنْ	تَقُوْمُوْا	لِلّٰهِ	مَثْنٰى	وَفُرَادٰى
बेशक	मैं नसीहत करता हूं तुम्हें	एक (बात) की	कि	तुम खड़े हो जाओ	अल्लाह के लिए	दो-दो	और अकेले-अकेले

ثُمَّ	تَتَفَكَّرُوْا ۗ	مَا	بِصَاحِبِكُمْ	مِّنْ جِنَّةٍ ؕ	اِنْ	هُوَ	اِلَّا
फिर	तुम ग़ौरो फ़िक्र करो	नहीं	तुम्हारे साथी को	कोई जुनून	नहीं	वो	मगर

نَذِيْرٌ	لَّكُمْ	بَيْنَ يَدَىْ	عَذَابٍ	شَدِيْدٍ ﴿46﴾	قُلْ	مَا
डराने वाला	तुम्हें	पहले	एक अज़ाब	सख़्त से	कह दीजिए	जो भी

سَاَلْتُكُمْ	مِّنْ اَجْرٍ	فَهُوَ	لَكُمْ ؕ	اِنْ	اَجْرِىَ	اِلَّا	عَلَى اللّٰهِ ۚ
मांगा है मैंने तुमसे	कोई अज्र	तो वो	तुम्हारे लिए है	नहीं	अज्र मेरा	मगर	अल्लाह पर

وَهُوَ	عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	شَهِيْدٌ ﴿47﴾	قُلْ	اِنَّ	رَبِّىْ	يَقْذِفُ
और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब गवाह है	कह दीजिए	बेशक	रब मेरा	वो डालता है

بِالْحَقِّ ۚ	عَلَّامُ	الْغُيُوْبِ ﴿48﴾	قُلْ	جَآءَ	الْحَقُّ	وَمَا	يُبْدِئُ
हक़ को	ख़ूब जानने वाला है	ग़ैबों को	कह दीजिए	आ गया	हक़	और ना	इब्तिदा करता है

الْبَاطِلُ	وَمَا	يُعِيْدُ ﴿49﴾	قُلْ	اِنْ	ضَلَلْتُ	فَاِنَّمَآ	اَضِلُّ
बातिल	और ना	वो एआदा करेगा	कह दीजिए	अगर	मैं भटक गया	तो बेशक	मैं भटकता हूं

عَلٰى نَفْسِىْ ۚ	وَاِنِ	اهْتَدَيْتُ	فَبِمَا	يُوْحِىْٓ	اِلَىَّ	رَبِّىْ ؕ	
अपनी जान पर	और अगर	हिदायत पा गया	तो बवजह उसके जो	वही की	मेरी तरफ़	मेरे रब ने	

اِنَّهٗ	سَمِيْعٌ	قَرِيْبٌ ﴿50﴾	وَلَوْ	تَرٰٓى	اِذْ	فَزِعُوْا	فَلَا
बेशक वो	ख़ूब सुनने वाला है	बहुत क़रीब है	और काश	आप देखते	जब	वो घबरा जाऐंगे	तो ना

بِهٖ ۚ	اٰمَنَّا	وَّقَالُوْٓا	قَرِيْبٍ ﴿51﴾ ۙ	مِنْ مَّكَانٍ	وَاُخِذُوْا	فَوْتَ
उस पर	हम ईमान लाए	और वो कहेंगे	क़रीब की	जगह से	और वो पकड़ लिए जाऐंगे	बचना होगा (उनके लिए)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاَنّٰى	لَهُمُ	التَّنَاوُشُ	مِنْ مَّكَانٍ	بَعِيْدٍ ۚ (52)	وَّقَدْ	كَفَرُوْا
और कहां से होगा	उनके लिए	हासिल करना (ईमान का)	जगह से	दूर की	और तहक़ीक़	उन्होंने इंकार किया था

بِهٖ	مِنْ قَبْلُ ۚ	وَيَقْذِفُوْنَ	بِالْغَيْبِ	مِنْ مَّكَانٍ	بَعِيْدٍ (53)
उसका	इससे पहले	और वो फेंकते रहे	बिन देखे	जगह से	दूर की

وَحِيْلَ	بَيْنَهُمْ	وَبَيْنَ	مَا	يَشْتَهُوْنَ	كَمَا	فُعِلَ
और रुकावट डाल दी जाएगी	दर्मियान उनके	और दर्मियान	उसके जो	वो ख़्वाहिश करेंगे	जैसे	किया गया

بِاَشْيَاعِهِمْ	مِّنْ قَبْلُ ؕ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	فِيْ شَكٍّ	مُّرِيْبٍ (54) ع
साथ उनके साथियों के	उससे पहले	बेशक वो	थे वो	एक शक में	बेचैन करने वाले

ع 6 9 12

آيَاتُهَا: 45 — 35 سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ 43 — رُكُوْعَاتُهَا: 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	فَاطِرِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	جَاعِلِ	الْمَلٰٓئِكَةِ
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	पैदा करने वाला है	आसमानों	और ज़मीन का	बनाने वाला है	फ़रिश्तों को

رُسُلًا	اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ	مَّثْنٰى	وَثُلٰثَ	وَرُبٰعَ ؕ	يَزِيْدُ	فِي الْخَلْقِ
पयामबर	परों वाले	दो-दो	और तीन-तीन	और चार-चार	वो इज़ाफ़ा करता है	तख़लीक़ में

مَا	يَشَآءُ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ (1)	مَا
जो वो	चाहता है	बेशक	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	जो

يَفْتَحِ	اللّٰهُ	لِلنَّاسِ	مِنْ رَّحْمَةٍ	فَلَا	مُمْسِكَ	لَهَا ۚ	وَمَا
खोल दे	अल्लाह	लोगों के लिए	कोई रहमत	तो नहीं	कोई बंद करने वाला	उसे	और जो

يُمْسِكْ ۙ	فَلَا	مُرْسِلَ	لَهٗ	مِنْ بَعْدِهٖ ؕ	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ
वो बंद कर दे	तो नहीं	कोई भेजने वाला	उसे	उसके बाद	और वो	बहुत ज़बरदस्त है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْحَكِيْمُ ②	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ	اذْكُرُوْا	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ ؕ	هَلْ
ख़ूब हिक्मत वाला है	ऐ लोगो	याद करो	नेअमत को	अल्लाह की	जो तुम पर है	क्या है

مِنْ خَالِقٍ	غَيْرُ	اللّٰهِ	يَرْزُقُكُمْ	مِّنَ السَّمَآءِ	وَالْاَرْضِ ؕ
कोई पैदा करने वाला	सिवाए	अल्लाह के	जो रिज़्क़ देता हो तुम्हें	आसमान से	और ज़मीन से

لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ۚ	فَاَنّٰى	تُؤْفَكُوْنَ ③	وَاِنْ	يُّكَذِّبُوْكَ
नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	तो कहां से	तुम फेरे जाते हो	और अगर	वो झुठलाते हैं आपको

فَقَدْ	كُذِّبَتْ	رُسُلٌ	مِّنْ قَبْلِكَ ؕ	وَاِلَى اللّٰهِ	تُرْجَعُ	الْاُمُوْرُ ④
तो तहक़ीक़	झुठलाए गए	कई रसूल	आपसे पहले	और तरफ़ अल्लाह ही के	लौटाए जाते हैं	सब काम

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ	اِنَّ	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقٌّ	فَلَا	تَغُرَّنَّكُمُ	الْحَيٰوةُ
ऐ लोगो	बेशक	वादा	अल्लाह का	सच्चा है	तो ना	हरगिज़ धोखे में डाले तुम्हें	ज़िंदगी

الدُّنْيَا وقفة	وَلَا	يَغُرَّنَّكُمْ	بِاللّٰهِ	الْغَرُوْرُ ⑤	اِنَّ	الشَّيْطٰنَ
दुनिया की	और ना	हरगिज़ धोखे में डाले तुम्हें	अल्लाह के बारे में	बड़ा धोखे बाज़	बिला शुबह	शैतान

لَكُمْ	عَدُوٌّ	فَاتَّخِذُوْهُ	عَدُوًّا ؕ	اِنَّمَا	يَدْعُوْا	حِزْبَهٗ
तुम्हारा	दुश्मन है	तो बनाओ उसे	दुश्मन	बेशक	वो बुलाता है	अपने गिरोह को

لِيَكُوْنُوْا	مِنْ اَصْحٰبِ	السَّعِيْرِ ⑥ ؕ	اَلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَهُمْ
ताकि वो हो जाऐं	साथियों में से	भड़कती आग के	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनके लिए

عَذَابٌ	شَدِيْدٌ ؕ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَهُمْ
अज़ाब है	सख़्त	और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए

مَّغْفِرَةٌ	وَّاَجْرٌ	كَبِيْرٌ ⑦ ع	اَفَمَنْ	زُيِّنَ	لَهٗ	سُوْٓءُ	عَمَلِهٖ
बख़्शिश है	और अज्र है	बहुत बड़ा	क्या भला वो जो	मुज़य्यन कर दिया गया	उसके लिए	बुरा	अमल उसका

ع 1 7 13

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَرَاٰهُ	حَسَنًا ؕ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	يُضِلُّ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْ
फिर वो देखे उसे	ख़ूबसूरत	तो बेशक	अल्लाह	वो गुमराह करता है	जिसे	वो चाहता है	और वो हिदायत देता है

مَنْ	يَّشَآءُ ۫	فَلَا	تَذْهَبْ	نَفْسُكَ	عَلَيْهِمْ	حَسَرٰتٍ ؕ	اِنَّ
जिसे	वो चाहता है	पस ना	जाती रहे	आपकी जान	उन पर	हसरतें कर के	बेशक

اَللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ	بِمَا	يَصْنَعُوْنَ ⑧	وَاللّٰهُ	الَّذِيْٓ	اَرْسَلَ
अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	जो कुछ	वो करते हैं	और अल्लाह	वो है जिसने	भेजा

الرِّيٰحَ	فَتُثِيْرُ	سَحَابًا	فَسُقْنٰهُ	اِلٰى بَلَدٍ	مَّيِّتٍ
हवाओं को	तो वो उठाती हैं	बादल	फिर चलाते हैं हम उसे	तरफ़ शहर	मुर्दा के

فَاَحْيَيْنَا	بِهِ	الْاَرْضَ	بَعْدَ	مَوْتِهَا ؕ	كَذٰلِكَ	النُّشُوْرُ ⑨
फिर ज़िंदा कर देते हैं हम	साथ उसके	ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के	इसी तरह होगा	उठाया जाना

مَنْ	كَانَ	يُرِيْدُ	الْعِزَّةَ	فَلِلّٰهِ	الْعِزَّةُ	جَمِيْعًا ؕ	اِلَيْهِ
जो कोई	है	चाहता	इज़्ज़त	तो अल्लाह ही के लिए है	इज़्ज़त	सारी की सारी	तरफ़ उसी की

يَصْعَدُ	الْكَلِمُ	الطَّيِّبُ	وَالْعَمَلُ	الصَّالِحُ	يَرْفَعُهٗ ؕ	وَالَّذِيْنَ
चढ़ते हैं	कलिमात	पाकीज़ा	और अमल	सालेह	बुलंद करता है उसे	और वो जो

يَمْكُرُوْنَ	السَّيِّاٰتِ	لَهُمْ	عَذَابٌ	شَدِيْدٌ ؕ	وَمَكْرُ	اُولٰٓئِكَ
मकर करते हैं	बुरे	उनके लिए	अज़ाब है	सख़्त	और मकर	उन लोगों का

هُوَ	يَبُوْرُ ⑩	وَاللّٰهُ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ تُرَابٍ	ثُمَّ	مِنْ نُّطْفَةٍ	ثُمَّ
वो	तबाह हो जाएगा	और अल्लाह ने	पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से	फिर	नुत्फ़े से	फिर

جَعَلَكُمْ	اَزْوَاجًا ؕ	وَمَا	تَحْمِلُ	مِنْ اُنْثٰى	وَلَا	تَضَعُ	اِلَّا
बनाया तुम्हें	जोड़े	और नहीं	उठाती	कोई मादा	और ना	वो जन्म देती है	मगर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِعِلْمِهٖ ؕ	وَمَا	يُعَمَّرُ	مِنْ مُّعَمَّرٍ	وَّلَا	يُنْقَصُ	مِنْ عُمُرِهٖۤ
साथ उसके इल्म के	और नहीं	उमर दिया जाता	कोई उम्र दिया हुआ	और ना	कमी की जाती	उसकी उम्र में से कुछ

اِلَّا	فِیْ كِتٰبٍ ؕ	اِنَّ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	یَسِیْرٌ ⑪	وَمَا	یَسْتَوِی
मगर	एक किताब में है	बेशक	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान है	और नहीं	बराबर हो सकते

الْبَحْرٰنِ ۖ	هٰذَا	عَذْبٌ	فُرَاتٌ	سَآئِغٌ	شَرَابُهٗ	وَهٰذَا
दो समुन्दर	ये	मीठा है	प्यास बुझाने वाला है	ख़ुशगवार है	पानी इसका	और ये

مِلْحٌ	اُجَاجٌ ؕ	وَمِنْ كُلٍّ	تَاْكُلُوْنَ	لَحْمًا	طَرِیًّا	وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
खारी है	निहायत तल्ख़	और हर एक से	तुम खाते हो	गोश्त	तरोताज़ा	और तुम निकाल लेते हो

حِلْیَةً	تَلْبَسُوْنَهَا ۚ	وَتَرَى	الْفُلْكَ	فِیْهِ	مَوَاخِرَ
ज़ेवर	तुम पहनते हो उसे	और आप देखते हैं	कश्तियों को	उसमें	फाड़ने वाली हैं

لِتَبْتَغُوْا	مِنْ فَضْلِهٖ	وَلَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ⑫	یُوْلِجُ	الَّیْلَ
ताकि तुम तलाश करो	उसके फ़ज़्ल से	और ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	वो दाख़िल करता है	रात को

فِی النَّهَارِ	وَیُوْلِجُ	النَّهَارَ	فِی الَّیْلِ ۙ	وَسَخَّرَ	الشَّمْسَ
दिन में	और वो दाख़िल करता है	दिन को	रात में	और उसने मुसख़्ख़र किया	सूरज

وَالْقَمَرَ ۖ	كُلٌّ	یَّجْرِیْ	لِاَجَلٍ	مُّسَمًّى ؕ	ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبُّكُمْ
और चांद को	हर एक	चल रहा है	एक वक़्त तक	जो मुक़र्रर है	ये है	अल्लाह	रब तुम्हारा

لَهُ	الْمُلْكُ ؕ	وَالَّذِیْنَ	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ	مَا	یَمْلِكُوْنَ
उसी के लिए है	बादशाहत	और वो जिन्हें	तुम पुकारते हो	उसके सिवा	नहीं	वो मालिक हो सकते

مِنْ قِطْمِیْرٍ ⑬ ؕ	اِنْ	تَدْعُوْهُمْ	لَا یَسْمَعُوْا	دُعَآءَكُمْ ۚ	وَلَوْ
खजूर की गुठली के छिलके के भी	अगर	तुम पुकारो उन्हें	नहीं वो सुनेंगे	पुकार तुम्हारी	और अगर

© ANJUMAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَمِعُوْا	مَا	اسْتَجَابُوْا	لَكُمْ ؕ	وَيَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	يَكْفُرُوْنَ
वो सुन लें	नहीं	वो जवाब देंगे	तुम्हें	और दिन	क़यामत के	वो इंकार कर देंगे

ع 2 7 14 الثلثة

بِشِرْكِكُمْ ؕ	وَلَا	يُنَبِّئُكَ	مِثْلُ	خَبِيْرٍ ﴿14﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ
तुम्हारे शिर्क का	और नहीं	कोई ख़बर दे सकता आपको	मानिंद	ख़ूब ख़बर रखने वाले के	ऐ	लोगो

اَنْتُمُ	الْفُقَرَآءُ	اِلَى	اللّٰهِ ۚ	وَاللّٰهُ	هُوَ	الْغَنِيُّ	الْحَمِيْدُ ﴿15﴾	اِنْ
तुम	मोहताज हो	तरफ़	अल्लाह के	और अल्लाह	वो ही है	बहुत बेनियाज़	ख़ूब तारीफ़ वाला	अगर

يَّشَاْ	يُذْهِبْكُمْ	وَيَاْتِ	بِخَلْقٍ	جَدِيْدٍ ﴿16﴾ ۙ	وَمَا	ذٰلِكَ
वो चाहे	वो ले जाए तुम्हें	और वो ले आए	एक मख़लूक़	नई	और नहीं	ये

عَلَى اللّٰهِ	بِعَزِيْزٍ ﴿17﴾	وَلَا	تَزِرُ	وَازِرَةٌ	وِّزْرَ	اُخْرٰى ؕ	وَاِنْ
अल्लाह पर	कुछ मुश्किल	और ना	बोझ उठाएगी	कोई बोझ उठाने वाली	बोझ	दूसरी का	और अगर

تَدْعُ	مُثْقَلَةٌ	اِلٰى حِمْلِهَا	لَا يُحْمَلْ	مِنْهُ	شَيْءٌ	وَّلَوْ
पुकारेगी	कोई बोझ से लदी हुई	तरफ़ अपने बोझ के	ना उठाया जाएगा	उससे	कुछ भी	और अगरचे

كَانَ	ذَا قُرْبٰى ؕ	اِنَّمَا	تُنْذِرُ	الَّذِيْنَ	يَخْشَوْنَ	رَبَّهُمْ
हो	क़राबतदार	बेशक	आप तो डरा सकते हैं	उन्हें जो	डरते हैं	अपने रब से

بِالْغَيْبِ	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ ؕ	وَمَنْ	تَزَكّٰى	فَاِنَّمَا	يَتَزَكّٰى
ग़ायबाना तौर पर	और वो क़ायम करते हैं	नमाज़	और जिसने	पाकीज़गी इख़्तियार की	तो बेशक	वो पाकीज़गी इख़्तियार करता है

لِنَفْسِهٖ ؕ	وَاِلَى اللّٰهِ	الْمَصِيْرُ ﴿18﴾	وَمَا	يَسْتَوِي	الْاَعْمٰى	وَالْبَصِيْرُ ﴿19﴾ لا
अपने नफ़्स के लिए	और तरफ़ अल्लाह ही के	लौटना है	और नहीं	बराबर हो सकता	अंधा	और देखने वाला

وَلَا	الظُّلُمٰتُ	وَلَا	النُّوْرُ ﴿20﴾ لا	وَلَا	الظِّلُّ	وَلَا	الْحَرُوْرُ ﴿21﴾ ج
और ना	अंधेरे	और ना	नूर	और ना	साया	और ना	धूप

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	يَسْتَوِي	الْاَحْيَآءُ	وَلَا	الْاَمْوَاتُ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُسْمِعُ	مَنْ
और नहीं	बराबर हो सकते	ज़िन्दा	और ना	मुर्दे	बेशक	अल्लाह	वो सुनाता है	जिसे

يَّشَآءُ ۚ	وَمَآ	اَنْتَ	بِمُسْمِعٍ	مَّنْ	فِي الْقُبُوْرِ ﴿22﴾	اِنْ	اَنْتَ
वो चाहता है	और नहीं	आप	सुनाने वाले	उन्हें जो	क़ब्रों में हैं	नहीं	हैं आप

اِلَّا	نَذِيْرٌ ﴿23﴾	اِنَّآ	اَرْسَلْنٰكَ	بِالْحَقِّ	بَشِيْرًا	وَّنَذِيْرًا ؕ
मगर	डराने वाले	बेशक हम	भेजा हमने आपको	साथ हक़ के	ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला (बना कर)

وَاِنْ	مِّنْ اُمَّةٍ	اِلَّا	خَلَا	فِيْهَا	نَذِيْرٌ ﴿24﴾	وَاِنْ	يُّكَذِّبُوْكَ
और नहीं	कोई भी उम्मत	मगर	गुज़रा है	उसमें	एक डराने वाला	और अगर	वो झुठलाते हैं आप को

فَقَدْ	كَذَّبَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ	جَآءَتْهُمْ	رُسُلُهُمْ
तो तहक़ीक़	झुठलाया	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	आए उनके पास	रसूल उनके

بِالْبَيِّنٰتِ	وَبِالزُّبُرِ	وَبِالْكِتٰبِ	الْمُنِيْرِ ﴿25﴾	ثُمَّ	اَخَذْتُ	الَّذِيْنَ
साथ वाज़ेह निशानियों के	और साथ सहीफ़ों के	और साथ किताबे	रोशन के	फिर	मैंने पकड़ लिया	उन्हें जिन्होंने

ع 3 12 15

كَفَرُوْا	فَكَيْفَ	كَانَ	نَكِيْرِ ﴿26﴾ ع	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ
कुफ़्र किया	तो किस तरह	हुई	सज़ा मेरी	क्या नहीं	आपने देखा	बेशक	अल्लाह ने

اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً ۚ	فَاَخْرَجْنَا	بِهٖ	ثَمَرٰتٍ	مُّخْتَلِفًا
उतारा	आसमान से	पानी	फिर निकाले हमने	साथ उसके	फल	मुख़्तलिफ़ हैं

اَلْوَانُهَا ؕ	وَمِنَ الْجِبَالِ	جُدَدٌ	بِيْضٌ	وَّحُمْرٌ	مُّخْتَلِفٌ	اَلْوَانُهَا
रंग उनके	और पहाड़ों में से	टुकड़े हैं	कुछ सफ़ेद	और कुछ सुर्ख़	मुख़्तलिफ़ हैं	रंग उनके

وَغَرَابِيْبُ	سُوْدٌ ﴿27﴾	وَمِنَ النَّاسِ	وَالدَّوَآبِّ	وَالْاَنْعَامِ	مُخْتَلِفٌ
कुछ काले	स्याह	और इंसानों में से	और जानवरों	और मवेशियों में से	मुख़्तलिफ़ हैं

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَلْوَانُهٗ	كَذٰلِكَ ؕ	إِنَّمَا	يَخْشَى	اللّٰهَ	مِنْ عِبَادِهِ	الْعُلَمٰٓؤُا ؕ
रंग उनके	इसी तरह	बेशक	डरते हैं	अल्लाह से	उसके बंदों में से	उलेमा ही

إِنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	غَفُوْرٌ (28)	إِنَّ	الَّذِيْنَ	يَتْلُوْنَ	كِتٰبَ	اللّٰهِ
बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत बख़्शने वाला है	बेशक	वो जो	पढ़ते हैं	किताब	अल्लाह की

وَأَقَامُوا	الصَّلٰوةَ	وَأَنْفَقُوْا	مِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	سِرًّا	وَّعَلَانِيَةً
और वो क़ायम करते हैं	नमाज़	और वो ख़र्च करते हैं	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	पोशीदा	और ऐलानिया

يَّرْجُوْنَ	تِجَارَةً	لَّنْ	تَبُوْرَ (29) لا	لِيُوَفِّيَهُمْ	أُجُوْرَهُمْ
वो उम्मीद रखते हैं	ऐसी तिजारत की	हरगिज़ ना	वो तबाह होगी	ताकि वो पूरे-पूरे दे उन्हें	अजर उनके

وَيَزِيْدَهُمْ	مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ	إِنَّهٗ	غَفُوْرٌ	شَكُوْرٌ (30)	وَالَّذِيْٓ
और ज़्यादा दे उन्हें	अपने फ़ज़्ल से	बेशक वो	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत क़द्रदान है	और जो

أَوْحَيْنَآ	إِلَيْكَ	مِنَ الْكِتٰبِ	هُوَ	الْحَقُّ	مُصَدِّقًا	لِّمَا
वही की हमने	आप की तरफ़	किताब में से	वो ही	हक़ है	तस्दीक़ करने वाली	उसकी जो

بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ	إِنَّ	اللّٰهَ	بِعِبَادِهٖ	لَخَبِيْرٌۢ	بَصِيْرٌ (31)
उससे पहले है	बेशक	अल्लाह	अपने बंदों के बारे में	अलबत्ता पूरी तरह बाख़बर है	ख़ूब देखने वाला है

ثُمَّ	أَوْرَثْنَا	الْكِتٰبَ	الَّذِيْنَ	اصْطَفَيْنَا	مِنْ عِبَادِنَا ۚ
फिर	वारिस बनाया हमने	किताब का	उनको जिन्हें	चुन लिया हमने	अपने बंदों में से

فَمِنْهُمْ	ظَالِمٌ	لِّنَفْسِهٖ ۚ	وَمِنْهُمْ	مُّقْتَصِدٌ ۚ	وَمِنْهُمْ
तो उनमें से कोई	ज़ुल्म करने वाला है	अपनी जान पर	और उनमें से कोई	मयाना रू है	और उनमें से कोई

سَابِقٌۢ	بِالْخَيْرٰتِ	بِإِذْنِ اللّٰهِ ؕ	ذٰلِكَ	هُوَ	الْفَضْلُ
सब्क़त ले जाने वाला है	नेकियों में	अल्लाह के इज़्न से	यही है	वो	फ़ज़्ल

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْكَبِيْرُ ﴿32﴾ ط	جَنّٰتُ	عَدْنٍ	يَّدْخُلُوْنَهَا	يُحَلَّوْنَ	فِيْهَا
बहुत बड़ा	बाग़ात हैं	हमेशगी के	वो दाख़िल होंगे उनमें	वो पहनाए जाऐंगे	उनमें

مِنْ اَسَاوِرَ	مِنْ ذَهَبٍ	وَّ لُؤْلُؤًا ج	وَلِبَاسُهُمْ	فِيْهَا	حَرِيْرٌ ﴿33﴾
कंगनों में से	सोने के	और मोती	और लिबास उनका	उनमें	रेशम होगा

وَ قَالُوا	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِيْٓ	اَذْهَبَ	عَنَّا	الْحَزَنَ ط	اِنَّ
और वो कहेंगे	सब तारीफ़	अल्लाह ही के लिए है	जो	ले गया	हमसे	ग़म	बेशक

رَبَّنَا	لَغَفُوْرٌ	شَكُوْرُ ﴿34﴾ لا	الَّذِيْٓ	اَحَلَّنَا	دَارَ	الْمُقَامَةِ
रब हमारा	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	निहायत क़द्रदान है	वो जिसने	ला उतारा हमें	घर में	दाइमी क़याम के

مِنْ فَضْلِهٖ ج	لَا يَمَسُّنَا	فِيْهَا	نَصَبٌ	وَّ لَا	يَمَسُّنَا	فِيْهَا
अपने फ़ज़्ल से	नहीं पहुंचती हमें	इसमें	कोई मशक़्क़त	और नहीं	पहुंचती हमें	इसमें

لُغُوْبٌ ﴿35﴾	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَهُمْ	نَارُ	جَهَنَّمَ ج	لَا يُقْضٰى
कोई थकावट	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनके लिए	आग है	जहन्नम की	ना काम तमाम किया जाएगा

عَلَيْهِمْ	فَيَمُوْتُوْا	وَلَا	يُخَفَّفُ	عَنْهُمْ	مِّنْ عَذَابِهَا ط	كَذٰلِكَ
उनका	कि वो मर जाऐं	और ना	हल्का किया जाएगा	उनसे	उसके अज़ाब में से	इसी तरह

نَجْزِيْ	كُلَّ	كَفُوْرٍ ﴿36﴾ ج	وَهُمْ	يَصْطَرِخُوْنَ	فِيْهَا ج	رَبَّنَآ
हम बदला देते हैं	हर	नाशुक्रे को	और वो	वो चिल्लाऐंगे	उसमें	ऐ हमारे रब

اَخْرِجْنَا	نَعْمَلْ	صَالِحًا	غَيْرَ	الَّذِيْ	كُنَّا	نَعْمَلُ ط	اَوَ لَمْ
निकाल हमें	हम अमल करें	नेक	अलावा	उसके जो	थे हम	हम अमल करते	क्या भला नहीं

نُعَمِّرْكُمْ	مَّا	يَتَذَكَّرُ	فِيْهِ	مَنْ	تَذَكَّرَ	وَجَآءَكُمُ
हमने उम्र दी थी तुम्हें	कि	नसीहत पकड़ता	इसमें	जो	नसीहत पकड़ता	और आ गया तुम्हारे पास

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 11 16

النَّذِيْرُ ؕ	فَذُوْقُوْا	فَمَا	لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿37﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ
डराने वाला	पस चखो	तो नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	बेशक	अल्लाह

عٰلِمُ	غَيْبِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	اِنَّهٗ	عَلِيْمٌۢ
जानने वाला है	ग़ैब	आसमानों	और ज़मीन का	बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿38﴾	هُوَ	الَّذِيْ	جَعَلَكُمْ	خَلٰٓئِفَ	فِي الْاَرْضِ ؕ
सीनों वाले (भेद)	वो ही है	जिसने	बनाया तुम्हें	जानशीन	ज़मीन में

فَمَنْ	كَفَرَ	فَعَلَيْهِ	كُفْرُهٗ ؕ	وَلَا	يَزِيْدُ	الْكٰفِرِيْنَ	كُفْرُهُمْ
पस जिसने	कुफ़्र किया	तो उसी पर है	कुफ़्र उसका	और नहीं	ज़्यादा करता	काफ़िरों को	कुफ़्र उनका

عِنْدَ	رَبِّهِمْ	اِلَّا	مَقْتًا ۚ	وَلَا	يَزِيْدُ	الْكٰفِرِيْنَ	كُفْرُهُمْ
नज़दीक़	उनके रब के	मगर	नाराज़गी में	और नहीं	ज़्यादा करता	काफ़िरों को	कुफ़्र उनका

اِلَّا	خَسَارًا ﴿39﴾	قُلْ	اَرَءَيْتُمْ	شُرَكَآءَكُمُ	الَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ
मगर	ख़सारे में	कह दीजिए	क्या देखा तुमने	अपने शरीकों को	वो जिन्हें	तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ	اَرُوْنِيْ	مَاذَا	خَلَقُوْا	مِنَ الْاَرْضِ	اَمْ
सिवाए	अल्लाह के	दिखाओ मुझे	क्या कुछ	उन्होंने पैदा किया है	ज़मीन में से	या

لَهُمْ	شِرْكٌ	فِي السَّمٰوٰتِ ۚ	اَمْ	اٰتَيْنٰهُمْ	كِتٰبًا	فَهُمْ
उनके लिए है	कोई शिरकत	आसमानों में	या	दी हमने उन्हें	कोई किताब	तो वो

عَلٰى بَيِّنَتٍ	مِّنْهُ ۚ	بَلْ	اِنْ	يَّعِدُ	الظّٰلِمُوْنَ	بَعْضُهُمْ	بَعْضًا
एक वाज़ेह दलील पर हों	उससे	बल्कि	नहीं	वादा करते	ज़ालिम	बाज़ उनके	बाज़ से

اِلَّا	غُرُوْرًا ﴿40﴾	اِنَّ	اللّٰهَ	يُمْسِكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	اَنْ
मगर	धोखे का	बेशक	अल्लाह	वो थामे रखता है	आसमानों	और ज़मीन को	कि

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَزُوْلَا ج	وَلَئِنْ	زَالَتَآ	اِنْ	اَمْسَكَهُمَا	مِنْ اَحَدٍ
(ना) वो दोनों टल जाएं	और अलबत्ता अगर	वो दोनों टल जाएं	नहीं	उन दोनों को थाम सकेगा	कोई एक

مِّنْۢ بَعْدِهٖ ط	اِنَّهٗ	كَانَ	حَلِيْمًا	غَفُوْرًا (41)	وَاَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ
बाद उसके	बेशक वो	है	बहुत हिल्म वाला	बहुत बख़्शने वाला	और उन्होंने क़समें खाईं	अल्लाह की

جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ	لَئِنْ	جَآءَهُمْ	نَذِيْرٌ	لَّيَكُوْنُنَّ	اَهْدٰى
पक्की	क़समें अपनी	अलबत्ता अगर	आया उनके पास	कोई डराने वाला	अलबत्ता वो ज़रूर होंगे	ज़्यादा हिदायत याफ़्ता

مِنْ اِحْدَى	الْاُمَمِ ج	فَلَمَّا	جَآءَهُمْ	نَذِيْرٌ	مَّا	زَادَهُمْ
किसी एक से	उम्मतों में	फिर जब	आ गया उनके पास	कोई डराने वाला	ना	उसने ज़्यादा किया उनको

اِلَّا	نُفُوْرًا (42) لا	اسْتِكْبَارًا	فِى الْاَرْضِ	وَمَكْرَ	السَّيِّئِ ط	وَلَا
मगर	नफ़रत में	तकब्बुर की वजह से	ज़मीन में	और चाल	बुरी (की वजह से)	और नहीं

يَحِيْقُ	الْمَكْرُ	السَّيِّئُ	اِلَّا	بِاَهْلِهٖ ط	فَهَلْ	يَنْظُرُوْنَ
घेरती	चाल	बुरी	मगर	उसके चलने वाले को	तो नहीं	वो इंतिज़ार करते

اِلَّا	سُنَّتَ	الْاَوَّلِيْنَ ج	فَلَنْ	تَجِدَ	لِسُنَّتِ	اللّٰهِ	تَبْدِيْلًا ج
मगर	तरीक़े का	पहलों के	तो हरगिज़ ना	आप पाएंगे	तरीक़े को	अल्लाह के	बदलने वाला

وَلَنْ	تَجِدَ	لِسُنَّتِ	اللّٰهِ	تَحْوِيْلًا (43)	اَوَلَمْ	يَسِيْرُوْا
और हरगिज़ ना	आप पाएंगे	तरीक़े को	अल्लाह के	फिरने वाला	क्या भला नहीं	वो चलते-फिरते

فِى الْاَرْضِ	فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ
ज़मीन में	फिर वो देखते	किस तरह	हुआ	अंजाम	उनका जो	उनसे पहले थे

وَكَانُوْٓا	اَشَدَّ	مِنْهُمْ	قُوَّةً ط	وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيُعْجِزَهٗ
और थे वो	ज़्यादा सख़्त	उनसे	क़ुव्वत में	और नहीं	है	अल्लाह	कि आजिज़ कर सके उसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ شَيْءٍ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَلَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	عَلِيْمًا
कोई चीज़	आसमानों में	और ना	ज़मीन में	बेशक वो	है	ख़ूब जानने वाला

قَدِيْرًا ﴿44﴾	وَلَوْ	يُؤَاخِذُ	اللّٰهُ	النَّاسَ	بِمَا	كَسَبُوْا	مَا
बहुत क़ुदरत वाला	और अगर	पकड़ लेता	अल्लाह	लोगों को	बवजह उसके जो	उन्होंने कमाई की	ना

تَرَكَ	عَلٰى ظَهْرِهَا	مِنْ دَآبَّةٍ	وَّلٰكِنْ	يُّؤَخِّرُهُمْ	اِلٰٓى اَجَلٍ
वो छोड़ता	इस (ज़मीन) की पुश्त पर	कोई जानदार	और लेकिन	वो मोहलत देता है उन्हें	एक वक़्त तक

مُّسَمًّى ۚ	فَاِذَا	جَآءَ	اَجَلُهُمْ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِعِبَادِهٖ	بَصِيْرًا ﴿45﴾ ع
मुक़र्रर	फिर जब	आ जाएगा	वक़्त उनका	तो बेशक	अल्लाह	है	अपने बंदों को	ख़ूब देखने वाला

ع 5 8 17

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ 41 — 36

اٰيَاتُهَا: 83 — رُكُوْعَاتُهَا: 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰسٓ ﴿1﴾ ۚ	وَالْقُرْاٰنِ	الْحَكِيْمِ ﴿2﴾ ۙ	اِنَّكَ	لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿3﴾ ۙ	عَلٰى
يٰسٓ	क़सम है क़ुरआन	हिक्मत वाले की	बेशक आप	अलबत्ता रसूलों में से हैं	ऊपर

صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿4﴾ ؕ	تَنْزِيْلَ	الْعَزِيْزِ	الرَّحِيْمِ ﴿5﴾ ۙ	لِتُنْذِرَ
रास्ते	सीधे के	नाज़िल करदा है	बहुत ज़बरदस्त का	निहायत रहम करने वाले का	ताकि आप डराऐं

قَوْمًا	مَّآ	اُنْذِرَ	اٰبَآؤُهُمْ	فَهُمْ	غٰفِلُوْنَ ﴿6﴾	لَقَدْ	حَقَّ
एक क़ौम को	नहीं	डराए गए	आबा ओ अजदाद उनके	पस वो	ग़ाफ़िल हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	सच हो गई

الْقَوْلُ	عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ	فَهُمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿7﴾	اِنَّا	جَعَلْنَا
बात	उनकी अक्सरियत पर	पस वो	नहीं वो ईमान लाऐंगे	बेशक हम	डाल दिए हमने

فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ	اَغْلٰلًا	فَهِيَ	اِلَى الْاَذْقَانِ	فَهُمْ	مُّقْمَحُوْنَ ﴿8﴾
उनकी गर्दनों में	तौक़	तो वो	ठोड़ियों तक हैं	तो वो	सर उठाए हुए हैं

© ALHUDA INTERNATIONAL FOUNDATION

وَجَعَلْنَا	مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ	سَدًّا	وَّمِنْ خَلْفِهِمْ	سَدًّا
और बना दी हमने	उनके सामने से	एक दीवार	और उनके पीछे से	एक दीवार

فَاَغْشَيْنٰهُمْ	فَهُمْ	لَا يُبْصِرُوْنَ ⑨	وَسَوَآءٌ	عَلَيْهِمْ	ءَاَنْذَرْتَهُمْ
फिर ढांप दिया हमने उन्हें	पस वो	नहीं वो देख पाते	और बराबर है	उन पर	ख़्वाह डराऐं आप उन्हें

اَمْ	لَمْ	تُنْذِرْهُمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑩	اِنَّمَا	تُنْذِرُ	مَنِ
या	ना	आप डराऐं उन्हें	नहीं वो ईमान लाऐंगे	बेशक	आप तो डरा सकते हैं	उसे जो

اتَّبَعَ	الذِّكْرَ	وَخَشِيَ	الرَّحْمٰنَ	بِالْغَيْبِ ۚ	فَبَشِّرْهُ
पैरवी करे	नसीहत की	और वो डरता हो	रहमान से	ग़ायबाना	पस ख़ुशख़बरी दे दीजिए उसे

بِمَغْفِرَةٍ	وَّاَجْرٍ	كَرِيْمٍ ⑪	اِنَّا	نَحْنُ	نُحْيِ	الْمَوْتٰى
बख़्शिश की	और अजर की	इज़्ज़त वाले	बेशक हम	हम ही	हम ज़िंदा करेंगे	मुर्दों को

وَنَكْتُبُ	مَا	قَدَّمُوْا	وَاٰثَارَهُمْ ؕ	وَكُلَّ	شَيْءٍ	اَحْصَيْنٰهُ
और हम लिख रहे हैं	जो	उन्होंने आगे भेजा	और उनके आसार को	और हर	चीज़ को	शुमार कर रखा है हमने उसे

وقف غفران

فِيْٓ اِمَامٍ	مُّبِيْنٍ ع ⑫	وَاضْرِبْ	لَهُمْ	مَّثَلًا	اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ
एक किताब में	जो वाज़ेह है	और बयान करो	उनके लिए	एक मिसाल	बस्ती वालों की

ع 1 12 18 وقف لازم

اِذْ	جَآءَهَا	الْمُرْسَلُوْنَ ⑬ ج	اِذْ	اَرْسَلْنَآ	اِلَيْهِمُ	اثْنَيْنِ
जब	आए उनके पास	रसूल	जब	भेजा हमने	तरफ़ उनके	दो को

فَكَذَّبُوْهُمَا	فَعَزَّزْنَا	بِثَالِثٍ	فَقَالُوْٓا	اِنَّآ	اِلَيْكُمْ
तो उन्होंने झुठला दिया उन दोनों को	तो क़ुव्वत दी हमने	साथ तीसरे के	तो उन्होंने कहा	बेशक हम	तरफ़ तुम्हारे

مُّرْسَلُوْنَ ⑭	قَالُوْا	مَآ	اَنْتُمْ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُنَا ۙ	وَمَآ
भेजे हुए हैं	उन्होंने कहा	नहीं हो	तुम	मगर	एक इंसान	हमारी तरह	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْزَلَ	الرَّحْمٰنُ	مِنْ شَيْءٍ ۙ	اِنْ	اَنْتُمْ	اِلَّا	تَكْذِبُوْنَ ⑮	قَالُوْا
नाज़िल की	रहमान ने	कोई चीज़	नहीं	तुम	मगर	तुम झूठ बोलते हो	उन्होंने कहा

رَبُّنَا	يَعْلَمُ	اِنَّآ	اِلَيْكُمْ	لَمُرْسَلُوْنَ ⑯	وَمَا	عَلَيْنَآ
रब हमारा	वो जानता है	बेशक हम	तरफ़ तुम्हारे	अलबत्ता भेजे हुए हैं	और नहीं	हम पर

اِلَّا	الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ ⑰	قَالُوْٓا	اِنَّا	تَطَيَّرْنَا	بِكُمْ ۚ	لَئِنْ
मगर	पहुंचा देना	खुल्लम- खुल्ला	उन्होंने कहा	बेशक हम	मनहूस समझा है हमने	तुम्हें	अलबत्ता अगर

لَّمْ	تَنْتَهُوْا	لَنَرْجُمَنَّكُمْ	وَلَيَمَسَّنَّكُمْ	مِّنَّا	عَذَابٌ
ना	तुम बाज़ आए	अलबत्ता हम ज़रूर संगसार कर देंगे तुम्हें	और अलबत्ता ज़रूर छुएगा तुम्हें	हमारी तरफ़ से	अज़ाब

اَلِيْمٌ ⑱	قَالُوْا	طٰٓئِرُكُمْ	مَّعَكُمْ ؕ	اَئِنْ	ذُكِّرْتُمْ ؕ
दर्दनाक	उन्होंने कहा	नहूसत तुम्हारी	साथ है तुम्हारे	क्या (इसलिए कि)	नसीहत किए गए तुम

بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ	مُّسْرِفُوْنَ ⑲	وَجَآءَ	مِنْ اَقْصَا
बल्कि	तुम	लोग हो	हद से बढ़े हुए	और आया	परले किनारे से

الْمَدِيْنَةِ	رَجُلٌ	يَّسْعٰى	قَالَ	يٰقَوْمِ	اتَّبِعُوا	الْمُرْسَلِيْنَ ⑳ ۙ
शहर के	एक शख़्स	दौड़ता हुआ	बोला	ऐ मेरी क़ौम	पैरवी करो	इन रसूलों की

اتَّبِعُوْا	مَنْ	لَّا يَسْـَٔلُكُمْ	اَجْرًا	وَّهُمْ	مُّهْتَدُوْنَ ㉑
पैरवी करो	इनकी जो	नहीं सवाल करते तुमसे	किसी अज्र का	जब कि वो	हिदायत याफ़्ता हैं

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION